

पुण्य ज्ञान दिवाकर शामनरत्न गुणद्वय आमान था तिन क गीन्द्र
सागर सूरीभर के स्मरणार्थ

ॐ अह नमोनम

॥ तपो विधि द्वितीय भाग ॥

*

सरस्वर गच्छगगनमानन्द पुण्य स्वर्गाय गणा ईश भीमात् मुग्ध
सागरना म० सा क वर्तमान पट्टपर विद्वद्वय गन्तमूर्ति
आ गणनायक हेमेन्द्रसागरजी म० सा० के आशा
तुयायिना पू० गु० प्र० स्वर्गाया भीमती लम्भा
श्री ना म० सा की विदुषी शिष्यारत्न स्व
भीमती शिष्योत्तम म मा०की पू० विदुषी
शिष्या प्र० श्रीमती यानप्रदाधारिणी
प्रमोदधीजा म० का शिष्या प्रमदा
धाता म० क सदुपदेश के

प्रकाशक—

* श्री रिमलप्रमोद-ज्ञान मन्दिर &
मु० फलदाहरा (फलोदी) राजस्थान

द्रव्य सहायक-भवत तथा भवता मण्डल

वीर-सं - १८८८
वि० म० २०११
आपाड गुता पूर्णिमा

मूय पटा पाठन

द्वितीयावृत्ति
१०

द्वय सहायक महानुभावों की नामावली

१००) रु०	शे० माणकचंदजी लक्ष्मीचन्दजी घोरा,	मु० सिधनूर
५५) रु०	„ शिवराजजी गातिलालजी साह,	„ रैरवा
५१) रु०	श्रीमता मूली जाड मठिया,	„ बीकानेर
२५) रु०	„ पाला श्राविका समान ने ज्ञान स्वात स त्रिय	„ पाली
२५) रु०	शे० अनोपरदजी सातेड,	„ जोधपुर
२०) रु०	मदनराजजा भणशाली,	„ जोधपुर
२०) रु०	श्रीमती केसरबाइ गुलेन्द्रा	„ फलोदी
१५) रु०	„ फलोदी श्राविका ज्ञान खाते से,	„ फलोदी
१५) रु०	„ हमीरमलता मोहनराजजी मुता,	„ रैरवा
११) रु०	श्रीमती रूपा बाइ गार्हीया,	„ पाली
१०) रु०	„ मोड़ी बाई फोचर,	„ फलोदी
१०) रु०	„ प्रेमलता बाइ बोथरा,	„ जोधपुर
१०) रु०	शे० चम्पालालजी वचन्द्रायत जी पत्नी,	„ फलोदी
६) रु०	श्रीमती गुमान बाइ मुता,	„ पाली
१५) रु०	„ सूयमाता बाइ गुप्ता	„ थानर
८) रु०	शे० सरदारमलजी की धर्मपत्नी,	„ जोधपुर
७) रु०	श्रीमता उगमता बाई लोढा,	„ जोधपुर
५) रु०	शे० जोगराजजी हमराजजी गुलेन्द्रा,	„ तारपुर
५) रु०	शे० प्रतापमलजी तूणायत,	„ समदड़ी
५) रु०	श्रीमती देवी बाइ	„ बालोत्तरा
५) रु०	„ निमला बाइ माल,	„ फलोदी
५) रु०	शे० दुलेराजजी भण्डारी की धर्मपत्नी,	„ जोधपुर
२३४) रु०	छुत्तर श्राविका मण्डल ज्ञान खातेके,	

नोट — एतदर्थ महानुभाव महानुभावा धन्यवाद के पात्र हैं,

किंचिद्वक्तव्य—

मय भासुङ्गण ।

आज मैं आपके सामने यह 'तपो विधि द्वितीय भाग' पूज्येश्वर श्रीमान् पुण्यपवित्र-वि-कुलकिरीट विद्वद्भ्रमर गुन्देय श्री मञ्जिन करीन्द्रमागरमुरीश्वरनेत्र के स्मरणाय प्रकाशित करता हूँ ।

इमम वापिइतप १ पाण्मासिकतप २ उपधानतप ३ विशा तिस्थानइतप विधिविधान महित साङ्गोपाङ्ग यणित करके हमारे पृथ्वीपर परमपूज्येश्वर विद्वद्भ्रमर श्रीमान् २२० श्री मञ्जिनहरिसागर सूरेश्वर साहय ने इसका निर्माण कर भव्यतना का परम उपहार किया है ।

अब इस पुस्तक से आप लोग अमृत लाभ लेकर तप श्रया व विधिनिधान को सुलभ रीति से प्राप्त कर सकेंगे । यही विचार कर यह पुस्तक द्वितीय वृत्ति में प्रकाशित की जाती है ।

भयनत इसमें अपना इष्ट साधन कर आत्म लाभ लें । तथा 'द्वितीय विभाग' में रोहिण्यातप, चौदह पूर्वतप की विधि भी दिखलाई गई है । अथ महर्षिगण की वनाइ हुई इस विधि का भी लाभ लें ।

अथ इसमें साथ ही गायन रूप गुरुगुण कीर्तन भी दिया गया है ।

यदि यत्रालय तथा लेख सम्बन्धा त्रुटि हो तो अवश्य उसे सुधार कर पढ़ें इति किमधिकम् सुतेषु ।

॥ शुभम्—भूयान् ॥

ॐ शान्ति ।

शान्ति ॥

शान्ति ॥ ॥

भरदीय-गुभेच्छुक्र

त्रि० प्र० ज्ञा० म०

मु० फगौदी (राजस्थान)

:: समर्पण ::

० ३

परम पूज्येश-श्री गुरुदेव भगवन् ! मैं श्रीमान्
स्वनाम धन्य-पुत्र सिद्धान्तशेखरी तत्त्वार्थानी
श्री मञ्जिनऋषीन्द्रसागरसूरीधर साह्य के
कर धर्मार्थ म अनन्त उपकार को
स्मरण कर अनन्य भक्ति बग
यह पुस्तक साह्य मप्रिय
श्रद्धाजलि रूप म सम
पित करती हूँ
कृपया इसे
स्वीकारें ।

इत्यन्तम्—भवदीय चरणोपासिका
आर्या-प्रकाश श्री

(स्वर्गीय-पूज्यधर)
प्रति स्मरणीय विद्वद्भर्य-श्री निनि
● पवीन्द्रसागरसूरीश्वर साहव ●



जम म १९६६ चत्र शुक्ल १३
दीभा सं १९७६ फागुन कृष्ण ६
मुरी पद सं २ १७ चत्र कृष्ण ७
स्वग सं २०१८ फाल्गुन शुक्ल ५

ॐ अहं नमः ॐ

॥ श्रीसुखमागर-भगवजिनहरि पूज्यपरमगुरुभ्यो नमो नमः ॥

पूज्यपात्र-पूज्येश्वर-प्राप्त स्मरणीय-सुगृहीत नाम-धेय-सर्वतंत्र
स्यसंज्ञ आमानान्नगरि-श्रीसुखिदित क्षरसरगच्छाधिराज
श्रीश्री १००८ श्रीभजिनहरिमागर सूरेश्वर विरचित

वर्षीतप-

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति संग्रहः ।

~~~~~

चैत्यवन्दन-१ ।

(द्रुष्टविस्तम्बितम्)

१

सिमल-बोध-विधान-विधायको,

युगल-ज्ञात-तमोपहरः प्रभुः ।

प्रकलमावसिमारिसुधामरान्,

हरिनवो जयताञ्जयताचिरम् ॥



२

अतल-भीममरोदधितारक ,  
 समल-साधन-भावसुधारक ।  
 जटिल-मोह-महोदय-हारको,  
 हरिनतो जयताञ्जयताचिरम् ॥

३

विपुल-वार्षिक-दिव्यतपोनिधौ,  
 तरलतारहितान्मपिवेरुगान् ।  
 अरुल एक-युगादिजिनेश्वरो,  
 हरिनतो जयताञ्जयताचिरम् ॥

चैत्यवन्दन---२ ।

( तोटक छन्द )

१

निज पूर्व क्रिये सबकर्म महा  
 बलवान् निरोधि-पराजय को ।  
 प्रभु आदि अचचल भागमरे,  
 तप शार्पिक हर्षित हो करते ॥

२

प्रभु का तप तेज अहो कितना,  
 निज को परको सुखदायक था ।

कुत कर्मरुटे मवमर्म मिटे,  
परमातमा-गुण मी प्ररुटे ॥

३

घन माग्य क्रिये चिनने प्रभु के,  
गुभ दर्गन दर्गन-पावन हो ।  
मुखमाणर वे भगवान चने,  
हरिपूज्य हुण ज्य ही जय हो ॥

### चैत्यवन्दन—३ ।

( हरिगीत छन्द )

१

श्रीसुखम दुग्गमा नाम आरा अन्तर्म जो अवतरे,  
भारत अरुर्मरु भावरो हर कर्मपथ जो धिर करे ।  
नर नारियों में पुण्यतम कर्त्तव्य बोधविधायक,  
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदपम चिननायकम् ॥

२

ससार के सब भोग मारी-रोग जैसे जान कर,  
साम्राज्य को रजपुज जैसे तन धरें समय-शर ।  
जग जीरगण को वाम जीवन ज्योति पावनदायक  
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदपमजिननायकम् ॥

कृत दुष्कृतों को दूर करने के लिये उपशान्तिमय,  
 जो धीरतर तपस्य भर कर पागये अनुपम विजय  
 भीनामिनुप मरुदेवीनन्दन कीर्तिगायन-लायक,  
 त नोमि हरिपूज्य पर श्रीमद्वपभ-निननायकम् ॥

## चैत्यवन्दन—४ ।

( शार्दूलविक्रीडितम् )

१

श्रीमन्नामिङ्कुलाम्बराम्बरमणिश्चिन्तामणिश्चिन्तिते,  
 ऽर्थे योगीन्द्र क्लीटनायकमणि कर्णव्यमार्गाग्रणीः  
 सन्दोर्ध्रऋधामणिगुणगणी कल्याणभाजप्रणी ॥  
 श हुर्याद् हरिपूज्य-पुण्यपदभागादौ युगग्रामणीः ॥

२

भिक्षाविध्यनभिनभक्तजनतानीते महोपायने,  
 १६ कन्या-रत्न-हयेभ वस्तुनिपये नित्य ह्युपेक्षापरः ।  
 दीक्षानन्तरमन्तरायशतशक्रेतपो वार्षिकु,  
 य सोऽय हरिपूज्य पुण्यपदनिः पायादपायान्त्रभुः ॥

३

जाति-स्मृत्युपलक्षिताय विधियन्नन्येक्षुभूयोरसः,  
 ११ १ श्रेयांसेन निहारितो भगवते भव्यान्मना भावतः ।

देवै पञ्च-सुखिदिव्यमहिमाऽङ्गरीति धन्ये धने,  
धन्यास्ते हरिपूज्यपुण्य महिता येऽक्ष्य फल लम्बिता ॥

## चैत्यवन्दन--५ ।

वृहा—

ॐ अहं आदिप्रभु-युगआदिस्वित्तिहार ।  
 कर्म अनादि दूर कर-बदू वार हजार ॥ १ ॥  
 निज जीवन आदर्श से नगनीन उपहार ।  
 कर्ता हे प्रभु आपनो-बदू वार हजार ॥ २ ॥  
 अतराय आश्रव समी-सेतू मैं हर वार ।  
 जीवन म पलटा कगे बदू वार हजार ॥ ३ ॥  
 पूरन कृत निज कम को भोगे आप उदार ।  
 मेरा क्या औशत घम -बदू वार हजार ॥ ४ ॥  
 वर्षातिथ कर आपने किया कर्म सहार ।  
 यह बल मुझको दीनिये-बदू वार हजार ॥ ५ ॥  
 सुखगागर भगवान हे-आदीश्वर अवतार ।  
 शरणागत रक्षा करो बदू वार हजार ॥ ६ ॥  
 हरि पूज्येश्वर आप हैं मेरे तो आचार ।  
 मनसा बचमा कर्मणा-बदू वार हजार ॥ ७ ॥

## स्तवन---१ ।

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान बना मनमंदिर आलीगान)

जय जय आदीश्वर भगवान

अगमगुणी शानी दया निधान ॥ टेंग ॥

प्रभुने युगलाधर्म निगारा, करम युग पावन खूब प्रचारा ।

बड़ा जग मन्व्य बला विज्ञान, हुआ फिर नीपन का कल्याण ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १ ॥

विनीता नगरी राज्यनमाया, भोगा पूर्य पुण्य कमाया ।

छोडा अरे अधिर सब जान, सयम साधा पुण्यप्रधान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ २ ॥

जगत की जनता भक्त तमाम, करती सप्रिय भाव प्रणाम

न जाने भिक्षा विधि विधान, इसी म धा सकेत महान् ।

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ३ ॥

पूरव भव का था यह पाप, बँल मुख छँरा बाधा आप

उसी से जाना विघन निदान, सहा प्रभु धमाबली बलवान ।

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ४ ॥

कन्या हम गय रथ मणिलावें, लोक प्रभुको भेंट चढावें

पर प्रभु धरें न उन पर ध्यान, विधियुक्त चाहें भिक्षादान

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ५ ॥

वरस यों पीता पिनि आहार, जय जय जिनवर जगदाधार ।  
 बने रह अमल सुमेर महान्, तभी तो पाये पूजा स्थान ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयांस कुमर अमलोके, जाती ममरण भात्र अशोकै ।  
 प्रभु के उचित सुभिदा दान, जाना, होगया हर्षित प्रान ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ ७ ॥

प्रभु के अतराय का योग, टूटा प्रकटा धन्य सुयोग ।  
 इक्षु रम बर अमृत पान, करारें श्रीश्रेयास महान ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ ८ ॥

प्रकृष्टे पच दिव्य अभिराम, काटे प्रभुने कर्म तमाम ।  
 धन्य वह समय धन्य अवधान, धन जो पाये दर्शन दान ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ ९ ॥

परब वह असा तीज शुभनाम, आराधक अक्षय गुणधाम ।  
 होते सुसमागर भगवान्, वर्षातिथि करके अनिदान ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ १० ॥

समाप्ति विधियुत तपको धार, भविन्न भवजल करते पार ।  
 करें 'हरि' उनका नित गुणगान, जय जय आदीश्वर भगवान् ॥  
 जय जय आदीश्वर भगवान्० ॥ ११ ॥



## स्तवन--२ ।

(सर्ज—गोपीचन्द लड़का पादल घरमे रे फंचन महेल में)

- आदीश्वर स्वामी नामी तल ऐसा हम को दीनिये ।  
 तप भफल करें हम वैसा बल कृपया हमको दीनिये ॥ टेरे ॥  
 पूरव भय कृत अन्तराय को, वर्षीतप कर तोडा ।  
 हम मी वैसे ही कर पावें, अड़े न आटा रोडा रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ १ ॥
- अतराय से मन की इच्छा, मनम नाथ समावे ।  
 कृप की छाया कृप समावे, कोई काम न आवे रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ २ ॥
- हम अज्ञानी अतराय के, आथय सारे सेवें ।  
 भयसागर भक्तधार नाथ हम, नाम दयाकर खेवें रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ३ ॥
- हस हस धार्धे कर्म अनेकों, नहीं रिवेरु धरावें ।  
 रोते रोते भोग रह हम, स्त्रिमको नाथ सुणावें रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ४ ॥
- सयम शक्ति रही न हममे, कोरी बात बनावें ।  
 कागज की नैया पर बैठे, कैसे पार लगावें रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ५ ॥

ऐव दूसरों के हम देखें, अपना करें न लेखा ।  
 इ गर बलता देख रहे पर, पग बलता नहीं देखा रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ६ ॥

घन्य घन्य प्रभु घन्य आपने, अपना रूप निपाया ।  
 परमात्म पद को प्रकट कर, परमानन्द गढ़ाया रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ७ ॥

नामि नृप मरुदेवा नदन, जय जय हे अत्रिकारी ।  
 वर्षीतप कर कर्म सपाये जायें हम बलिहारी रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ८ ॥

घन हथिणाउर पावन भूमि, घन श्रेयाम कुमार ।  
 घन इक्षुरस पान प्रिया प्रभु, घन दिन पर्व उदारा रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ९ ॥

चैतवदी आठम से लेकर, सुद वैसाखी तीजे ।  
 वर्षीधिक तप प्रिया पारणा, शान्त सुधारस भीजे रे ।  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ १० ॥

सुरसागर मगमान तुम्ही हो, प्रभु हरिपूज्य हमारे ।  
 जीवनमें बल बुद्धि भरदो, गावें जय जय कारे रे ॥  
 आदीश्वर स्वामी० ॥ ११ ॥





## स्तवन---३ ।

(सर्ज—शुद्ध सुहर अति मनोहर घोल वंदे मात्र)  
 आदि जिनररजी अनादि, कर्ममल हर लीनिये ।  
 दाम हू अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजिये ॥ ८ ॥  
 तीसरा आरा प्रभु वह था, अरुमक मात्र में ।  
 कर्मयुग तत्र था दिखाया, अरु भी दिखला दीनिये । आ० ॥ १ ॥  
 आपने नर नारियों को, मोक्ष की दी थी कला ।  
 नाथ अरु वैसी कला का, दान दयया कीनिये । आ० ॥ २ ॥  
 राजनीति धमेनीति, के प्रवर्तक आप हैं ।  
 है अनीति छा रही बस दूर उमको कीनिये । आ० ॥ ३ ॥  
 राज को रजपुत्र माना भोग माने रोग से ।  
 त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजिये । आ० ॥ ४ ॥  
 वर्षभर रहकर निराहारी, करम तोड़ें प्रभु ! ।  
 वह मफल तप कर सकू, यह शक्ति प्रभु दे दीजिये । आ० ॥ ५ ॥  
 हाथि हय कन्या रतन मणि क, प्रलोभन आपने ।  
 थे चला न सके अचलता, नाथ मुझको दीजिये । आ० ॥ ६ ॥  
 भक्त घर श्रेयांस मे ले, इक्षुरस पावन किया ।  
 वैसी भक्ति कर सकू, वैसा नमय प्रभु दीनिये । आ० ॥ ७ ॥  
 की तपस्या में क्षमा थी आपने अनुपम प्रभु ! ।  
 उस क्षमा की साधना को आज सिखला दीनिये । आ० ॥ ८ ॥  
 ज्ञान फल आपने पाया स्वमाता को दिया ।

शुद्ध उमके अशरा बुद्ध दान दाता कीनिये । आ० ॥९॥  
 आप सुखमागर प्रभु भगवान हैं समार म ।  
 नाथ निन पद मक्ति के अधिमार को बुद्ध दीनिये । आ० ॥१०॥  
 हे प्रभो हरिपूज्य गुण गाया करू नित आपरा ।  
 बुद्धिबल बह दीनिये इम विनति को गुन लीनिये । आ० ॥११॥

## स्तवन--- ४ ।

(वर्न—तुम को लाखों प्रणाम)

आदीरर अरतारी तुम को लाखों प्रणाम ।

अपभ प्रभु जयकारी तुम को लाखों प्रणाम ॥ टेरे ॥

नामि नृप मस्टेरी नदा, इक्ष्वाकु कुल कमल टिणदा ।

युगलाधर्म निवारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १ ॥

कोशल देश विनीता पावन, जनता मे डाला नर जीवन ।

आदि युग उपकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ २ ॥

चौसठ बहुतर कला मिखाई, सुखमय जीवन रीति दिखाई ।

पुण्य कला मलिहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ३ ॥

बीस लाख पूरव तरु स्वामी, रहे कुमार पदे अभिरामी ।

धन जीवन अमिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ४ ॥

तेमठ लाख पुरवतरु राना, रहे जगत के प्रभु सिरताना ।

राज नीति विस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ५ ॥

भरताद्रिक सी सुत बडवीरा, गुण म सागर सम शमीरा ।  
 तद्भन शिव सचारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ६ ॥  
 ब्राह्मी सुदरी सुता मती थीं, शील महाप्रत पुष्पयती थीं ।  
 नाम लियां निस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ७ ॥  
 अनामक्त भोगी प्रभु योगी, मयम धारें नृप सहयोगी ।  
 साधु चार हनारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ८ ॥  
 पूर्व जन्म कृत कर्म प्रभावे, समुचित मिथ्या वस्तु अभावे ।  
 वर्षाधिर निराहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ९ ॥  
 त्रिपा निरतर सुप्रत साधन, प्रभु अनत बल धारी घन घन ।  
 परम क्षमा त्रितधारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १० ॥  
 श्रीश्रेयास कुंवर पुण्योदय, असातीन इश्वरस सुगमय ।  
 त्रत पारण निर्द्धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ११ ॥  
 एक लाख पूरव समय घर, उचरोतर गुणठाना चडकर ।  
 हुए मुक्ति अधिमारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १२ ॥  
 स्वामी शरणागत हू तारो, मफल तपोमल बुद्धि तितारो ।  
 हरिपूजित पद धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १३ ॥

### स्तवन---५ ।

(तर्ज —मीनासर स्वामी अतरजामी तारो पारसनाथ-माढ़)

आदिश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी अभिरामी अमृतार ।

पंचम गतिगामी निजगुणधामी आरामी अधिस्वार रे ॥ टेर ॥

हे प्रभु कर्म से पीड़ित हूँ मैं कर्म बड़े पिरराल ।  
 आप अकर्मक मात्र के नायक, मेरी करो प्रतिपाल रे आ० ॥१॥  
 घाती अघाती चार चार हैं, है उनका विमतार ।  
 आत्म के गुण जाठ उन्हीं पर ये करते अधिकार रे आ० ॥२॥  
 मिथ्यात्वादिक हतु सहित जो निरिया होती राम ।  
 उमसे आत्म पढता पुढल, रूपी कर्म के पाम रे आ० ॥ ३ ॥  
 शुभ निरिया है पुण्य का कारण, कचन बढ़ि समान ।  
 पाप अशुभ है लोह की बडी दुस्सह दु ए निदान रे आ० ॥४॥  
 जीव अनादि कर्म अतादि, उमय अनादि मयोग ।  
 कनमोपल म पात्रक लैगे, स्वामी माधो त्रियोग रे आ० ॥५॥  
 प्रभु गुण जैसे शुभमें भी है, सत्तागत गुण आठ ।  
 व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे श्रुतामन काठ रे आ० ॥ ६ ॥  
 निचन घनाचन कर्म बली को, वर्षाधिक तप धार ।  
 आत्म ध्यान सुपावन पवने, आप त्रिया परिहार रे आ० ॥७॥  
 बध उदय उदीरणा सत्ता गत मम कर्म अनेक ।  
 उसपर त्रिनय करूँ मैं कैसे ? यह दो नाथ त्रिक रे आ० ॥८॥  
 गुण ठानों की महिमा मारी, फरमाई जगनाब ।  
 उत्तरोत्तर में भी चढ पाउ , जो पदडो मुझ हाथ रे आ ० ॥९॥  
 कर्म प्रवर्तक हो कर स्वामी हुए अकर्मक आप ।  
 यह तप त्याग तपोयल शुद्धि देदो हूँ मा वाप रे आ० ॥१०॥  
 मुखसागर भगवान परमहरि पूज्य दया कर देन ! ।  
 पाउ अकर्मरुतुम पददर्शन तो नित साधु सेन रे आ० ॥११॥

## स्तवन---६ ।

(सर्ज—अग्रभू सो जोगीगुरु मेरा—आशावरी)

बाबा ऋषम चिनद तप धारें ।

कर्म कलक निहारें रे बाबा० ॥ टेरे ॥

राज तना सुख साज तना निज आत्म के उपयोगी ।  
 ग्राम नगर पुर चिचरे स्वामी, समय सुख के भोगी रे बा० ॥१॥  
 मिथ्याविधि नही लोकर पिछाने, प्रभु कर्मोदय जानें ।  
 मौन सहित वर्षाधिकृतप को, परम क्षमा सह ठाने रे बा० ॥२॥  
 मक्ति सहित नरनारी प्रभु क अर्पण हित नित लावें ।  
 कन्या हय गय रथ रतनों को, नाथ नजर नही ठावें रे बा० ॥३॥  
 श्रीश्रेयांस कुचर पुण्योदय जाती समरण भावे ।  
 जिन दर्शन मिथ्या विधि जाने इक्षुरम बहिरावे रे बा० ॥ ४ ॥  
 धन दाता धन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुहावे ।  
 पंच दिव्य प्रकटे नित जय जय सुर गणपति हरि गावें बा० ॥५॥

## स्तवन---७ ।

(सर्ज—तेरा तो हो चुका हू चाहे तारा या न तारो—कन्याली)

आदीश देव प्यार पिनती करु चिचाने ।

निज दास जान करक मेरी दशा सुधारो ॥ टेरे॥

स्वामी कहे मिना ही, सत्र आप जानते हैं ।  
 धानी प्रभो दयालु, अज्ञान को निवारो आ० ॥१॥  
 फौला प्रभात्र भारी, रमों का नाथ मुझ पर ।  
 गुमराह हो रहा हूँ अयदेव ! बस उरारो आ० ॥२॥  
 तप वर्ष भर किया था, हा आप तो बली हैं ।  
 बल हीन दीन मुझ में, बल तुझ को प्रचारो बा० ॥३॥  
 पर पौत्र आपका था श्रेयास भाग्यशाली ।  
 अति भक्ति कर मरा था मैं क्या करूँ उचारो आ० ॥४॥  
 सुखसिन्धु नाथ भगवन् हरिपूज्य नाव मेरी ।  
 मझघार में पटी है, करके दया उधारो आ० ॥ ५ ॥

— —

## स्तवन—८ ।

(तर्न—मैं तो दिवाना प्रभु तेरे लिये)

प्रभु हाजिर खुडे हम तेरे लिये ।  
 तेरे लिये हा तेरे लिये प्र० ॥ टेरे ॥  
 नाभि नृप मरुदेरी के नदन ।  
 वदन करें हम तेरे लिये प्र० ॥ १ ॥  
 हाथी को लावें घोड़ों को लावें ।  
 रथ को मगावें प्रभु तेरे लिये प्र० ॥ २ ॥

कन्या को लाने व्याह रचाने ।

म्हेल तैयार करें तेरे लिये प्र० ॥ ३ ॥

रत्नों को लाने मणियों को लाने ।

वचन का ढेर करें हम तेरे लिये प्र० ॥ ४ ॥

झाल दुशाले वस्त्र अनोसे ।

अर्पण करे हम तेरे लिये प्र० ॥ ५ ॥

यह दुःख हम से देखा न जावे ।

दुखिये है हम प्रभु तेरे लिये प्र० ॥ ६ ॥

समार छोडा समय को धारा ।

मौनी हुए प्रभु क्रिमके लिये प्र० ॥ ७ ॥

वर्षातप को धारे प्रभु जी ।

कर्म कलक हरने क लिये प्र० ॥ ८ ॥

श्रेयांस आया इक्षुगस लाया ।

नह तो उचित था तेरे लिये प्र० ॥ ९ ॥

भक्तों ने नाना तव से प्रभुजी ।

आहार दना तेरे लिये प्र० ॥ १० ॥

पंच दिव्य तन प्रकटे ये भारी ।

'हरि' कर जय तेर लिये प्र० ॥ ११ ॥

१) ~ १)

## स्तवन—९ ।

(तर्न—मेर मौला मदीने बुलालो मुमे)

आदिनाथ अनादि कलरु हरो ।

मांगे सदि अनत के मात्र भरो ॥ टेरे ॥

ज्ञान गुण उज्ज्वल अस्पी आप रूप आतमा ।  
 कर्म से रूपी कलकी हो रहा है सातमा ।  
 स्वामी कर्मों का जल्दी से आप करो । आ० ॥ १ ॥  
 अतराय अनत ने घेरा मुझे है सर्वथा ।  
 जानते हैं आप, अपनी क्या कह दुग्य की कथा ।  
 अतराय का अत विशेष करो । आ० ॥ २ ॥  
 वर्षभर स्वामी निरतर आपने त्रत थे क्रिये ।  
 कैसे करू निर्मल मुझे मल नाथ बुद्ध बुद्ध दीनिये ।  
 मेरी दीन दशा पर गौर करो । आ० ॥ ३ ॥  
 आप के तप तेन ने सब लोक आलोकित किये ।  
 उम तेन में इम दास को भी आप अपना लीनिये ।  
 घन घोर अधेरे को दूर करो । आ० ॥ ४ ॥  
 मुख सिन्धु विभु मगवान हे हरिपूज्य दर्शन दीनिये ।  
 निज दयामय दृष्टि से पियूष दृष्टि कीनिये ।  
 बीच अन्तर को प्रभु दूर करो । आ ॥ ५ ॥





## स्तुति—१ ।

आदीश्वर स्वामी अतरनामी आप,  
 र्षी तप ठाया पूरे पुण्य प्रताप ।  
 पूरव कृत दुष्कृत अतराय कर दूर,  
 प्रकटाया पावन परमात्मपद नूर ॥ १ ॥  
 कर्मों को तोड़े प्रिना न होत्रे मिद्धि,  
 कर्मों के हटते होती मिद्धि ममृद्धि ।  
 जगमें जो पाते होते हैं वे सिद्ध,  
 उनको नित वदू निन गुण भाग विशुद्ध ॥२॥  
 फर्म समी जड आत्म के आधार,  
 दिखलाते अपना अद्भुत बल विस्तर ।  
 कर्मों की सारी रचना श्री निनदेन,  
 आगम में भार्य करू सदा में सैर ॥३॥  
 चक्रेश्वरी देरी चक्रधारिणी माय,  
 गरुडासन धारी करती भक्त सहाय  
 हरिपूज्य प्रभु की शानन देरी आप,  
 मा हरो हमारे पाप ताप सन्ताप ॥ ४ ॥



## स्तुति--२ ।

मुमुक्षुमा दूराम्ना के अथ गतव मरुतान,  
 युग क्रदि वर्णा हर्णा प्रग लक्ष्मण ।  
 तिव माग्य बांधे नित्र संभनदृष्ट्या,  
 वर्तित्त भारे अर अर वाम प्रदन्त्या ॥१॥

इत्युत्तमान अर एमा गति दिवद्वार,  
 शिवा भारे वारे अर्तो वम रिह्यार ।  
 भवाम उपयत्ते परमात्मान वर धर,  
 श्रवणादि विद्वार वन्दु वाद्वार ॥२॥

नि तप वितात्तमा तर वर उपमशार,  
 हाता उपम म गतन मनन्य रिषार ।  
 पायादिह जानी महतीती समशार,  
 श्रित्त जगम बोने सुतो मदा धनाय ॥३॥

हृदिपूज्य मुपात्ता विन दातन व म र  
 मवि जो प्रतापे उनरु भूमिा प्रमत्त  
 मव दरो देस रिपन द्वे मशान,  
 सुता मपती पूरे मयो मयो चक्रान ॥४॥

## स्तुति---३ ।

वद चैत की आठम मयम धारें नाथ,  
 माधु हो जायें चार सहस्र नर माय ।  
 पूरव भव भावी विघन घनाघन जोर,  
 वर्षातिथ ध्यानें हरें नमू कर चोर ॥ १ ॥  
 भिक्षाविधि जाने नहीं लोकरु मविशेष,  
 देवें कन्या हय हाथी मणि मय वेग ।  
 वर्षाधिऋतधर त्रीतराग अपतार,  
 मौनी महात्यागी प्रभु की जय जयकार ॥ २ ॥  
 जाती समरण से श्रीश्रेयाम कुमार,  
 प्रभु रूप पिछाने भिक्षा विधि विचार ।  
 इक्षु रस अमृत वहिरात्रे शुभ भाव,  
 चिन आगम बोधे जय जय पुण्य प्रभाव ॥ ३ ॥  
 हरिपूज्य प्रभुका तप पाण्डित्य मार,  
 पावन तम जगम असातीच जयकार ।  
 सोनैया सुमनम सुगंध जल वरसाद,  
 सुर अमुर करें जग जय जय पुण्य प्रमाद ॥ ४ ॥



## स्तुति—१ ।

प्रभु आदि महा यदि मनु मा,  
 आदि विदु अदि मीनदा प्रलय ।  
 नादि मन्दिता नदा मग मलय,  
 दसदा धारी दसद दस उदय ॥ १ ॥  
 तीर्थ वर हो मा हो मलय मीन,  
 कृत वरुनी का मा वरुनी होना मीन ।  
 मारी व अपरुनी वरु हो मलय मलय,  
 मीनमी विन्दु प्रलय उदय उदय ॥ २ ॥  
 गिदाग मुनारो अरुदरा अरुदरा,  
 पूव मा वरुदरा मीन वरुदरा ।  
 उद विन्दु विन्दु मीन वरुदरा मलय,  
 आदा विदा मलय मलय मलय ॥ ३ ॥  
 उद उद मलय मलय मलय विन्दु,  
 मलय मलय मलय मलय मलय ।  
 मीन मीन मीन मीन मीन मीन,  
 मलय मलय मलय मलय मलय ॥ ४ ॥

## स्तुति—५ ।

अमर्षिणी तीना आरा अत अनत,  
 गुग्गुधारी प्रकटे आदीश्वर जयवत ।  
 साधु हो सार्धे सर्पाधिक तप घोर,  
 कर्मों को धारों मन्दू जुग कर जोर ॥ १ ॥  
 सम्पद्गर्जन पर ज्ञान चरण चित्त धार,  
 साधक जन सार्धे आतम गुण जमिहार ।  
 रूपी भार्यों को तन मन आप सरूप,  
 आतम परमातम वदू त्रिभुवन भूष ॥ २ ॥  
 वषावप आदि हें तप त्रिविध प्रकार,  
 उपशम धर भावे आराधक अधिकार ।  
 तिन आगम गाव गुरुगम साधन सार ।  
 सिद्धिगति पारें शाश्वत सुख भंडार ॥ ३ ॥  
 सुखमागर स्वामी अष्टभदेन भगवान,  
 तिनहृत्पूज्येश्वर शासन तिनय त्रिधान ।  
 आराधे सुविहित तप विधि जो नर नार,  
 चक्रेश्वरी गौमुख उनको दे सुख सार ॥ ४ ॥

दशमोऽध्यायः-

# त्रैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

त्रैत्यवन्दन-१ ।

( शिवस्तुति )

( १ )

एवमप्युवाच परमेश्वरः ॥  
अथ तत्रैत्यवन्दनं ॥  
स्तोत्रं शिवस्तुतिं ॥  
महाशिवस्तुतिं ॥

( २ )

महाशिवस्तुतिं ॥  
महाशिवस्तुतिं ॥  
शिवस्तुतिं ॥  
महाशिवस्तुतिं ॥

( ३ )

शुभाशुभोपि भीमानुत्तममहादेवस्तुतिः,  
महाशिवस्तुतिं ॥  
शुभाशुभोपि भीमानुत्तममहादेवस्तुतिः,  
महाशिवस्तुतिं ॥

## चैत्यवन्दन-२ ।

( हरिगीत )

( १ )

समार सुखर सरदुग हर अतुल बलशाली प्रभु,  
निश्चय उमी मत्र मोक्षगामी मयमी होते विभु ।  
उपमर्ग से निश्चल रह निज साधना मे जो मद्रा,  
बन्दू उन्हीं श्रीवीर निनर को प्रिय से मैं मुद्रा ॥

( २ )

सगम अधम सुर ने उपद्रव दुष्टता मे जय क्रिये,  
षट्मास तर भगवानने त्रत तर निरन्तर थे क्रिये ।  
शान्ति क्षमा गुण धीरता वरवीरता रक्षणी सदा,  
बन्दू उन्हीं श्रीवीर निनर को प्रिय से मैं मुद्रा ॥

( ३ )

प्रभु वीतदूषण ज्ञान भूषण पुण्य गुण भडार है,  
मुख मिन्धु हैं जग वन्दु है भगवान है आधार हैं ।  
हरिपूज्य है मा वाप है हतपाप है जो सर्वदा,  
बन्दू उन्हीं श्रीवीर निनर को प्रिय से मैं मुद्रा ॥



## चैत्यमन्दन-३ ।

सुखदिवस १४०

( १ )

साम सामन दिन विरये,  
अनुमानापी अगता ही ।  
सुखति प्रमाणम और मे,  
सुखि हर हर मातर मरिचि ॥

( - )

दयम गयम हर मनम म  
गुन साधना क दिा अगता ।  
सन्नि भाव मग सगता म्हा  
अति उत्तरव हा अरमान मे ।

( १ )

प्रथम क्षण मनै सगता रद,  
ए सुमर कर्मा सगता नरी ।  
अपत आर रद मर सो मया,  
अप मिरेरत वीर अगतापुती । ।

( २ )

नर हनोपम हो गुर धा गता,  
मनु अरारता मनु दयानिधि ।

नयन में कृष्णानल था मरा,  
सुर निरर्थक दुर्गति पायगा ॥

(५)

जय सुखोदधि शामन नाथ ह,  
निनपते भगवान् जगदीश्वर ।  
धन घड़ी धन माय करे हरि,  
निनय वदन वीर जिनेश को ॥

### चैत्यवन्दन-४ ।

(१)

स्वयधुद्ध परमात्मा, महावीर भगवान् ।  
तीर्थरर चौईमघें तप गुण पुण्य प्रदान ॥

(२)

छहमासी तप दो सिये, पाच दिवस कम एक ।  
महा अभिग्रह साथ में, चमा सहित मवित्रेक ॥

(३)

चौमामी नव की प्रभु, त्रिमासी दो वार ।  
ढाइ मासी दो दफे, दो मासी छह वार ॥

(४)

डेढ माम दो वार तप, करें प्रभु सुपिलास ।  
मास खमण बारह तथा, बहुतर आवे मास ॥



## छमासी अभिग्रह चैत्यवन्दन--५

(१)

महावीर महिमा निधि-वद् मान-प्रधान ।  
छहमासी दिन पाचरुम-उपगामी भगवान् ॥

(२)

पोष रदी पडिया प्रभु महाअभिग्रह धार ।  
इम हात्त में दे यदि तीरुपे आहार ॥

(३)

नप कन्या दामी हुई, मुण्डित मस्तरु-रुश ।  
पडी नेटिया पैर हा, रोती हो समिशेष ॥

(४)

अन्तर बाहिर पग मिये, द्वार दगु के पाम ।  
उठद माहुले छान में लिय हुए हो साम ॥

(५)

भिक्षा से निवृत्त हों जम भिक्षाचर लोकर ।  
अद्रम तप क पारणे, घर रुग मात्र अशोकर ॥

(६)

सतियों मं मोटी मती, चन्दन वाला सार ।  
पूर्ण अभिग्रह को करे, धन धन धन अतार ॥

(७)

सुख सागर भगवान् "निन हरि" पूजित अमिहार ।  
महातपस्वी वीर को—वद्, बारवार ॥



ढाल—२

(धन—भेख वनारो राना भरथरी)

रे मन प्रभु गुण मे रमो, प्रभु हैं वारण हार ।  
रे मन० ॥ १ ॥

मगम सुर उपसर्ग मे अनुपम जातमध्यान ।  
घारे वीर प्रभु नमो—भक्ति भाव प्रधान ।  
रे मन० ॥ १ ॥

धूली रपा सुर करे, भरे निज मन पाप ।  
वनसुखी करे चींटियें, पर प्रभु निर्मल आप ।  
रे मन० ॥ २ ॥

मच्छड डास धिमेल से चटमावे प्रभु श्रग ।  
छोडे मिच्छु नेवला, चूह काले भुनर्ग ।  
रे मन० ॥ ३ ॥

हांवी हथणी मदभरे, माटे व्याघ्र कराल ।  
अटड्डहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल ।  
रे मन० ॥ ४ ॥

तेन दना तलवारसी-और आधी अपार ।  
फैलावे सुर पर प्रभु—आतम गुण अविकार ।  
रे मन० ॥ ५ ॥



द्वान - ३

(तर्ज—थोड़ीसी जिदगी के पान क्या तुम कड़वा बोलो)

महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।  
 धीर वीर गमीर जानी और नहीं है ॥ टेर ॥  
 मन बच तनु तीनों योग चिनक आत्म योगी ।  
 शायत सुखमें लीन, दुखसा नाम नहीं है ॥  
 महावीर स्वामी० ॥ १ ॥

सगम मुर उपसर्ग करता नाना भाती ।  
 छह महीना महावीर मन में शोच नहीं है ॥  
 महावीर स्वामी० ॥ २ ॥

बह धरु गया मुरलीरु-मुरपतिने प्रियकारा ।  
 घन प्रभु वीर महावीर मनमें क्रोध नहीं है ॥  
 महावीर स्वामी० ॥ ३ ॥

इच्छा रोधन योग प्रभु तपधारी भारी ।  
 छह महीना उपवास निषय की आश नहीं है ॥  
 महावीर स्वामी० ॥ ४ ॥

सुगमागर भगवान सुरगणपति हरि बह ।  
 महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।





यम नियमादिह आठ माधना, मद्रु स्त्रुद्रु मद्रु मद्रु  
मन वच काया योग एवता अत्रु एवता अत्रु

श्री ३३० ३३

परमात्म पर ज्योति रूपे त्रिमुखन म्रु त्रिमुख  
हे प्रमु कृपा दी उपकारी नित्र एवता अत्रु अत्रु

श्री ३३१ ३३

हो अशम मनसे तप कैसे मारु म्रु अत्रु अत्रु  
प्रमु पद म तन्मय हो जाऊ, यह विरि म्रु अत्रु अत्रु

श्री ३३२ ३३

रान योग हठ योग न जाऊ, अत्रु अत्रु अत्रु  
इहा विंगला नहीं सुपमणा, अत्रु अत्रु अत्रु

श्री ३३३ ३३

उपगगों म रहूँ अचचल निरु अत्रु अत्रु  
बैसी शक्ति दीन प्रभुवर, अत्रु अत्रु अत्रु

श्री ३३४ ३३

शूलपाणि अरु चण्डमोदिन अत्रु अत्रु अत्रु  
आत्म बोध पाये प्रमु तुमसे अत्रु अत्रु अत्रु

श्री ३३५ ३३

सुखसागर भगवान तुम्हाहे अत्रु अत्रु अत्रु  
शरणागत वत्सल सुख अत्रु अत्रु अत्रु

## स्तुति—१

(१)

सनातनी तवमे पारन विनया क्षीर,  
 अविच्छेद भूमिस्त्रिमम मागारमम गभीर ।  
 तवमे शुभ दाता कृत् उपजग अनेक,  
 यन्द् उपकारी वीरगाग मन्दिरे ॥

(२)

शत्रु मित्रा मे विनया हे गममात्र  
 अविच्छेदी भ्रुवम विनया पुत्र प्रदात्र ।  
 उन्नरोधर शुद्धि सुखल्य न शशिधरी,  
 त्रिभुवन्दा मात्र तवनीन्द्र उपकारी ॥

(३)

सनातनी तव श्री मन्त्रिमा अगम अकारी,  
 निष्णाम भार से करे मरिचक नरकारी ।  
 भय नागर विग्ने भरत पुत्र्य मण्डारी,  
 त्रिभुवन्दा मात्र ज्ञाउ मे बलिहारी ॥

(४)

गिद्धापिरा देशी मार्गी शान्त माई,  
 आराधे उन श्री करती निय मदाई ।  
 त्रिभुवन्दा मात्र उर्द्धमान भगवान्,  
 सेरा अनुगामी दे मनशांति दाता ॥

## स्तुति—२

(१)

प्रभु धीर जितेग्यर महा अभिग्रह धारें,  
 छहमासे रम दिन पाच महातप धारें ।  
 वदन गला के उडद गडुले नाथ,  
 तप पारें धन धन मविनय जोड़ हाथ ॥

(२)

द्रव्य चेनादिक भेद विशेष विचार,  
 कर दिव्य अभिग्रह पावन तप गुण धार ।  
 कर्मों को मेटे जगमें नो नर नार,  
 मिद्धातम होते बद् गारगार ॥

(३)

सब छोड परिग्रह सयम माधन हेतु,  
 मय सागर तारण कारण शुभ गुण सेतु ।  
 तप सहित अभिग्रह महिमा अपरपार,  
 विन आगम गात्र बोलो जप जप करार ॥

(४)

विन हरिपूजित पद शामन अनुपम एक,  
 जो सेरें मविनन निर्रण शुद्धि निरेक ।  
 मिद्धापिशादेवी मिद्ध कर सब काज,  
 तपधारी जनके, धरमें अविचल रात्र ॥

श्री वीम स्यानक तप-

# चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

## चैत्यवन्दन-१

२५-

वीम स्यानक मायना, साव जो नर नाग ।  
तीर्थकर पत्नी गे, उन्दू बाराण ॥

( हरिगत )

शिव पद मायना वाह श्रीश्रगिहत पद पहिले नम् ,  
शिव अरु और अनत अत्याप्राप्त मिदू सुपद नम् ।  
वर ज्ञान दर्शन चरण भूमि मय प्रयचन पद नम् ,  
पानादि पचायत युत आचार्य पद अनुपम नम् ॥  
सद्धर्म म थिर रण क्षाण्ण थिरि पद मदिनय नम् ,  
निव पर ममय पाठर उदुश्रुत मक्तिमर माय नम् ।  
इच्छा सुनेपन घोर तप मायक तपस्वी पद नम् ,  
सर्वमापित त्रिय आगम ज्ञान पद पावन नम् ॥  
तत्त्वार्थ में श्रद्धा अशक्ति माव दर्शन पद नम् ,  
शुभ ज्ञान दर्शन चण्ण दारु रर रितय पद जो नम् ।  
चण्ण ररणादि त्रिया चारि पद निर्मय नम् ,

शील प्रतादिक साधना पद प्रज्ञपर्य सदा नमू ॥  
 प्रति ममय शम मवेग जादिक भावना किरिया नमू ,  
 गारह प्रकारी गाय अभ्यतर सुतप पत् नित नमू ।  
 सत पात्र म शुभ दान, मर्ष प्रपाय त्याग सुपद नमू ,  
 दश विध महागुण भाव प्रपायच पद गतमद नमू ॥  
 औपध प्रमृत्त से सागु जन सुखर समाधिपद नमू ,  
 अक्षर पत् श्लोकादि रूप अपूर्व श्रुतपद नित नमू ।  
 गुरु ज्ञान परिणमनादि श्रुत प्रहृमान पद माडर नमू ,  
 प्रवचन प्रभावन पद धरम उन्नति करण कारक नमू ॥

दूहा—

सुपमागर भगवान 'निन हरि' पूनित पढ सार ।  
 लट भग्नी के न्याय से ध्याउ धन अतार ॥

## चैत्यवन्दन--२ ।

( रामगिरि रागण गीयते )

( १ )

विंशति स्थानकाराधनायोगत ,  
 सभवेत्तीर्थकृत्-नामकर्म ।

तीर्थकृत्नामकर्म प्रमायादहो,

जायतेऽनन्तगुणमिद्विशर्म ॥ विंश० ॥

( २ )

चेन्नरो नारि एतन्पदाराधन,  
 शुद्धविधि कूर्ते शान्तमारैः  
 सर्वममा रिपूज्यात्मतां प्राप्नुयात्,  
 भेदरहितात्मना सर्वथा वै ॥ विश० ॥

( ३ )

एक मेरु पद चापि सर्वार्थद,  
 सर्वपद पुण्यमहिमा ह्यनन्त ।  
 तद्भवन्ता भवन्ता जना भावतो,  
 येन हरिशूनार्हा भवन्त ॥ विश० ॥

### चैत्यवन्दन-३ ।

( १ )

वीस स्थानक तप सिया, प्रकटे पुण्य अगाध ।  
 तीर्थ कर पद प्राप्त हो, हो सुख अन्याराध ॥

( २ )

तीर्थ कर जो है हुए, होंगे तीनों काल ।  
 वीस स्थानक माधते, तजकर आल पपाल ॥

( ३ )

अहतादिक वीस पद, भेदा भेद विचार ।  
 निज पद में प्रगटे यदि, धन धन वह नर नार ॥

( ४ )

शक्ति रूप सबमें रहे, व्यक्त होय त्रिवियोग ।  
व्यक्त हुए उनको नमू, सगिनय त्रिभरणयोग ॥

( ५ )

सुखमागर भगवान् नित, हरिपूजित जगदीश ।  
तन्मय बन्दू तीर्थपति, उपकारी चौरीम ॥

—

## चैत्यवन्दन--४ ।

( द्रुतविलंबित )

( १ )

विजयि देव जिनेश्वर विश्व में,  
भय मयकर दुःख हरेँ सदा ।  
विशद वीस सुथानक सेवना,  
निधि दिख्यार्है नमू शुभ भावसे ॥

( २ )

जगतमें जितने पद और हैं,  
परम आत्म उन्नति के लिये ।  
विलसते सब थानक वीसमें,  
प्रभु दया नित सेवन में करू ॥



( ३ )

सुगनिधे भगवान् हरिपूज्य हे,  
 सुखद शक्ति कृपाकर दीनिये ।  
 कर्म शत्रु हराकर म करू,  
 तम पदाम्बुज पावन सेवना ॥

### स्तवन—१ ।

( तत्र—सिद्ध चक्रपद बंदो र भविका० )

वीस ध्यानक जय कारी र सरो उपकारी अविहारी ।  
 तीर्थकर पद हतु भरोदपि तारण सेतु सुखकारी ।  
 र सरो वीम धानक० ॥ ८ ॥

अरिहत सिद्ध सुपावन प्रवचन जाचारज गुणधामी ।  
 विरि र गुरुभुत दिव्य तपस्वी ज्ञान परम अभिरामी ।  
 रे सेरो वीस धानक० ॥ १ ॥

दर्शन विनय चरण शीलप्रत क्रिया करम गपारे ।  
 तप पद त्याग विशद वयोमय शुद्ध समाधि उपाय ।  
 रे सेरो वीस धानक० ॥ २ ॥

अपूर्वभुत अम्यास ज्ञान बहू, मान अवोध निगारे ।  
 तीर्थ प्रभायना करते आत्म, परमात्म पद धारे ।  
 र सेरो वीम धानक० ॥ ३ ॥

श्रुति प' महिमा अनुपम अद्भुत श्रीमद्गुरु परतरे ।

सुरल अगुठ विर भाव साधर विररे मार म्यात्रे ।

र सेरो वीम ध नरु० ॥ ४ ॥

प्रतिरद मन छठ अष्टम, भाप वीस वीम तिनराया ।

ज्ञानाधर्म क'शादिक पावन छत्रे भ' बनाया ।

रे सेरो वीम धानरु० । ५ ॥

तप पद मे अरिहा तप तपने आठ फरम तप जारे ।

वनसोपत्यत आनम निमल-ज्योति आप जगाव ।

रे सेरो वीम धानरु० ॥ ६ ॥

रिस्था रिगदित जीवन पावन रिषय विचार विहीना ।

वीम धानरु गिर वानरु दाता-मयित आनंदपीना ।

र नेरो वीम धानरु० ॥ ७ ॥

प्रात मध्या आप'वरुशिवि प्रतिरमण शुभ भाये ।

प'गुग माला ध्यान पूव गरिन पाप हटाव ।

र सेरो वीस धानरु० ॥ ८ ॥

देव वन्दन गुण वन्दन गरिनय तन्मय तद्गुणयोगी ।

अरिधाधरु साधरु हो अन्या राधपरम गुणभोगी ।

रे सेरो वीम धानरु० ॥ ९ ॥

घड शत व्रत छठ अष्टम तपने आग'न हो पूरा ।

तीर्थकर पद नूर प्ररुट हो, फमा या घरचूरा ।

रे सेरो वीस धानरु० ॥ १० ॥

उद्यापन अधिकारी होते सुखसागर भगवाना ।  
हरि पूजित निन भाषित साधन साधे पुण्य प्रधाना ।  
रे सेगो बीस थानक० ॥११॥

## स्तवन---२ ।

(सज - धिना प्रभु पात्र के देखे मेरा दिल बेफरारी है )

गनन

नमू निन दर जयगारी, हृदय शुधमात्र लाकरके ।  
जरू नित नाम की माला, हृदय शुधमात्र लाकरके ॥ देर ॥  
तिराव तीर्थ कहलाता, प्रभुनी आप तीर्थ कर ।  
में आठ आप तरू कैसे ? हृदय शुध मात्र लाकरके ॥न०॥  
प्रभुजी बीस थानक तप, तपाता आठ कर्मों की ।  
सन्धि माधु कहो कैसे ? हृदय शुध मात्र लाकरके ॥न०॥  
जिनेश्वर आप ज्योतिर्मय, महा अघेर हरते हैं ।  
सुज्योति पाठ में कैसे ? हृदय शुध मात्र लाकरके ॥न०॥  
प्रभु अरिहत है स्वामी, सुनामी सिद्ध सुखगारी ।  
धनू सुखिया यहाँ कैसे ? हृदय शुध मात्र लाकरके ॥न०॥  
अगम सुख सिन्धु हे भगवन् परम हरिपूज्य उपकारी ।  
मिलू मैं आप से कैसे ? हृदय शुध मात्र लाकरके ॥न०॥

### स्तवन—३ ।

(सजें—मैं आया तेरे द्वार पर बुद्ध भेकर जाऊंगा )

श्री तीर्थ पर मगवान् तारुणद्वार ध्याऊंगा ।

ए सेवा करके प्रेम मे तन्मय हो जाऊंगा ॥ १ ॥

बीम ध्यानश् माधना रुद्र परके दिखलाई ।

मैं भी तिन शक्ति साधना में नाथ लगाऊंगा । श्री० ॥१॥

जगत्त्रय दया कर पाठ प्रभुग पढिले दर्शाया ।

निज जीवन में मैं दया भावना ही अपनाऊंगा । श्री० ॥२॥

मय माया मिथ्या जाल को जिनवर ने तोड़ा है ।

प्रभु मन्त्र माधना में निज मन को रोज रमाऊंगा । श्री० ॥३॥

निज महा लागती जौन प्रभु परमात्म पूर है ।

निज अन्तर आत्म लीन हुआ मैं भी गुण गाऊंगा । श्री० ॥४॥

प्रभु मुखनागर मगवान् तिन हरिपूजित उपसारी ।

मैं गरिहारी योगों से पूजा प्रेम रखाऊंगा । श्री० ॥५॥



### स्तवन—४ ।

( तब कसरिया धामु प्र त लगी र सज्जे भाव सु )

तीर्थ कर बंदो तार दु ख बार तिहुँसाल म ॥ १ ॥

अनुपम आत्म दर्शन योगे, परमात्म पद ध्याने ।

जल मे कमल रह ज्या जीवन, साधरूपद सनमाने ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ १ ॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हों जिन शासन रागी ।  
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भार भुखी बड मागी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ २ ॥

तीन भुवन उपकार भार, कल्याण मित्र जयकारी ।  
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अपिकारी अतारी रे ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ३ ॥

वीम स्थानक महा साधना, साधरु निन भर तीजे ।  
उत्तरोत्तर मुहृत सुख भोगी, प्रभुता गुण रस भोजि ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ४ ॥

सब चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय घारी ।  
तीर्थ कर वर नाम कर्म को, सफल करें बलिहारी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ५ ॥

जनम मरण जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।  
तीर्थ कर दर्शन धन पाऊं, धन दिन पुण्य प्रभाता ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमाथ पूरण, जो कर पावे प्राणी ।  
ज्योतिर्मय जग मे वह पावन, सोले निज शुण खाणी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ७ ॥

अरिहतादिक धीम पत्ने की, मेरा शिव सुन्दारी ।

अप्रमत्त माधे कर मन्दिन, पात्रे पद अरिहारी ।

र तीर्थ कर यदो० । ८ ॥

जाठ सिद्धी नरनिधि निरु घरम प्रकट परमोदारी ।

तीनलोफ माप्राज्य मपन दामी धने विहारी ।

र तीर्थ कर यत्ने० ॥ ९ ॥

धीम स्थानक विधि निन आगम, गुरु गम मे नन्दारी ।

आगध माधे निन सिद्धि, बनरामरपदधारी ।

र तीर्थ कर यदो० ॥ १० ॥

मुग्गमागर भगवान महोदय, निन हरि पूजित स्वामी ।

धीम स्थानक गुणी-गुण गाऊ, मातर मदा नमामि ।

र तीर्थ कर यदो० ॥ ११ ॥

## स्तुति--१ ।

धीम स्थानक में गुणि गुण भेदाभेद,

ध्याता जो ध्यात निर्मय भाव श्रेय ।

तीर्थ कर पत्नी पाव पृथ्व प्रधान,

बहु विधियोगे त्रिस्तरण गुद्विनिधान ॥ १ ॥

शैशान्तिक भाव तीर्थ कर भगवान,

भय मागर तारण कारण रूप महान ।

जल मे कमल रह ज्यों जीवन, साधकपद सनमाने ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ १ ॥

महा मोहमर्ति मूढ जगत जन हों निन शासन रागी ।  
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाग सुखी बड मागी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ २ ॥

तीन भुवन उपभार भाग, कन्याण मित्र जयकारी ।  
पुण्य मन्दीद्रय गुणी महाशय, अपिकारी अगतारी रे ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ३ ॥

बीम स्थानक महा साधना, साधक निन भय तीजे ।  
उत्तरोत्तर सुकृत सुख मोगी, प्रभुता गुण रस भीजे ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ४ ॥

सध चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय धारी ।  
तीर्थ कर वर नाम कर्म को, सफल करें बलिहारी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ५ ॥

जनम मरण जीवन कन्याणी, जग कन्याण विधाता ।  
तीर्थ कर दर्शन धन पाऊं, धन दिन पुण्य प्रभाता ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमाथ्य पूरण, जो कर पावे प्राणी ।  
न्योतिमय जग में बह पारन, खीले निन गुण खाणी ।  
रे तीर्थ कर वदो० ॥ ७ ॥

वरिहंतादिक वीस पदों की, सेवा शिव सुखकारी ।

अप्रमत्त भावे कर भजिनन, पावें पद अमिहारी ।

रे तीर्थ कर उदो० । ८ ॥

आठ मिट्टी नरनिधि निज घरम प्रकटे परमोदारी ।

तीनलोक भाम्राज्य मपदा दामी बने विचारी ।

र तीर्थ कर उदो० ॥ ९ ॥

वीम स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नरनारी ।

आराधे साधे निज सिद्धि, अनरामरपटधारी ।

र तीर्थ कर उदो० ॥ १० ॥

मुसमागर भगवान महोदय, निज हरि पूजित स्वामी ।

वीस स्थानक गुणी गुण गाऊ, सांर मदा नमामि ।

रे तीर्थ कर उदो० ॥ ११ ॥

## स्तुति-- १ ।

वीम स्थानक मे गुणि गुण मेदाभेद,

ध्याता जो ध्याव निर्भय भाव अखेद ।

तीर्थ कर पदवी पाव पुण्य प्रधान,

वदू विधियोगे त्रिस्त्रण शुद्धि विधान ॥ १ ॥

त्रैलोकिक भावे तीर्थ कर भगवान,

भव सागर तारण कारण रूप महान ।



होते हैं होंगे और दृष्ट पदवीम,  
 सैरा से मेरा उद् जिन जगदीश ॥२॥  
 बीस स्थानक तप माधन सुरसद रिधान,  
 ज्ञातादिक आगम गावे गुरु गम ज्ञान ।  
 आराधे मयिनन पाव पद कल्याण,  
 सुविहित निःआगम बन्दू चीवनप्राण ॥३॥  
 हरि पूजित श्री चिन शानन धामित भार,  
 मयि गीम स्थानक माधन पुण्य प्रभार ।  
 गुर असुर उन्ही के नौय सहायक आय,  
 फैले त्रिभुवन में साधक पुण्य प्रताप ॥४॥

## स्तुति—२ ।

बीस स्थानक में सत्य देव गुरु धर्म,  
 तीनों तत्त्वों से कट जाते दुष्कर्म ।  
 तीर्थ कर पदवी प्रकटे तीनों रत्न,  
 बद् नित सयिनय धारन पुण्य प्रयत्न ॥१॥  
 बीस स्थानक हैं जिन आत्म के भार,  
 साधें जो मयिनन परमात्मपद धार ।  
 सत चित आनदे रमण करें धान भाग,  
 बन्दू ज्योतिर्मय वीतराग महामाग ॥२॥

प्रति पद की महिमा जगम अपरपार,  
 सुप्त विधियोगे आगधे नर नार ।  
 आगम अनुमारे गीम वीम उपनाम,  
 बला लेला से प्रगट परम प्रकाश ॥ ३ ॥  
 वीम स्थानक सुखमागर दिव्य तरंग,  
 भरताप मिटायेँ माटि जनत सुभग ।  
 आराधक जन क सुरगणपति हरि जाप,  
 फँटायेँ जगम अनुपम पुण्य प्रताप ॥ ४ ॥

### स्तुति---३ ।

अरिहत मिट्ट प्रवचन हरि प्रियर उद्भुत ग्नेनी,  
 तपमी वान मुग्धन मगिनय चारित्र शील सुखग्नेनी ।  
 दिगिया तप अत्याग वयापच समाधि श्रुत अभ्यामोनी,  
 वान सुभक्ति तीर्थ प्रभावन वानक नाम विलामोनी ॥१॥  
 ममजिपारी विषय विगागी चलमे कमल ममानानी,  
 वग जन प्रभु शामन अनुयायी अरण सुभाज प्रदानानी ।  
 गीम स्थानक आराधन कर तार्पण-पद-प्राणीनी,  
 नृप ह होते है होंगे वन्दू गुण अविहारीनी ॥ २ ॥  
 पार मो व्रत या वेला तला प्रतिपद गीम निदानेनी,  
 तन्मय होकर पद गुण माला गीम वीम कर ध्यानेनी ।  
 गीम स्थानक आराधन विधि निन जागम से जानोनी,  
 व्रत पूरण उपासन पावन निवनीवन धन मानोनी ॥३॥

सुखमागम भगवान् महोत्सव विनयात् सुखकारीनी,  
हरिपूजित वीमस्थानक तपसा कृते नरनारीनी ।  
मासतन्वी द्वेष उन्नी कष्टेषु मानिवहणीनी  
कृपाकराग्रजनुमोदनकलपात् राजशलिहारीनी ॥४॥

## स्तुति—४ ।

( २२२ )

श्री प्रज्जनिस्त्रा—रा १७

तीर्थस्वरूपसम्भवे तपसा ।

ज्योतिस्वरूपस्यैव सुभक्त्या

दन्तस्त्रा—रा ११ ॥१॥

श्री प्रज्जनिस्त्रा—रा १८

स्फूर्त्तुस्त्रा—रा १२ ॥

ये तन्मयात्तु तपसा

तपसापि विद्यापि तपसापि ॥२॥

श्री प्रज्जनिस्त्रा—रा १९

तपसापि तपसापि तपसापि ॥

स्तनया तपसापि तपसापि

भक्त्या तपसापि तपसापि ॥३॥

श्री प्रज्जनिस्त्रा—रा २०

प्रज्ञा तपसापि तपसापि ॥

समेऽपि तपसापि तपसापि

तपसापि तपसापि तपसापि ॥४॥

श्री उपधान तप

# चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति



## चैत्यवन्दन-१

दृश-

स्वस्ति श्री गुणेश मदा, वद्वमान भगवान् ।  
स्वयमुद्र गान्त पति, वत् प्रिय विवान् ॥१॥  
प्रभु परतन पावनविधि, परमात्म पद ह्य ।  
योगाचरु भाव से, माधु तिममवन ॥२॥  
निच आत्म उद्धार म, पश्चात्तर विगत ।  
अल्प भाव भावना, नाते तित त्वगत ॥३॥  
उपादान जयान्न गुण, ज्ञानात्तर प्रगत ।  
महा निष्ठा भावरु पर, उद्यम दत्त उपदान ॥४॥  
गुण सागर भगवान् तिन, हृदयैश्वर धीर ।  
आत्मा की जारयना, इत्थ वन्य तकीर ॥५॥

## चैत्यवन्दन-२ ।

( १. नमिन्नमिधम छ ६ )

परम धारण रोध विधान म, रविममान विनेशर वीर को ।  
 सकल योग मन्त्राधि निमित्तम, हृदयसे नत मस्तरु दो नमू ॥१॥  
 भव मयकर मागर में श्रद्धो ! सविधि साधरु तारण के लिये ।  
 विनयी वीर विनेशर देवता, नयतु श्रामन जीवन पोतसा ॥२॥  
 “उप” ममीष गता परमात्मरु, सुगुरु के सहयोग विशेष से ।  
 प्रति निनातम “धान” सुधारणा, मफलता प्रभु के उपधानमें ॥३॥  
 समउधान रह उपधान म, प्रभु पद प्रकट परमात्मता ।  
 परम सूत्र विश्राम शिलासते, जनमना मरणा भिदता ममी ॥४॥  
 सहच हो मयमागर लीनता, सुगम हो भगवद्गण भावना ।  
 निमी करे ‘हरि’ वन्दन वीर रो, तिमि करु उपधान विधान से

## चैत्यवन्दन--३ ।

( ५सतातलका छ ६ )

श्रीवर्द्धमान भगवान महान वीर ।

सर्वाङ्गि-पाप मल शोचन हतु नीर । ।

समार ताप शमनाय समीर सीर,

वन्द मन्त्र गरल हा भरमि-पुतीर ॥१॥

ह नाथ नित्य भवदीय पुनीत आत्मा,  
 पाठू यथा प्रभु मुक्ते बलशक्ति देना ।  
 हो कम रोग भव भोग त्रियोग मेरे,  
 साठू स्वय चरणमें महयोग सेवा ॥२॥  
 निस्तारता प्रकट है फिर भी प्रभो हा,  
 ममार म रत रहूँ सुखिडम्बना है ।  
 सत्पौध शक्ति दयया वरदान दना,  
 त्याठू निजाम उपधान करू यशमें ॥३॥  
 स्वामी न हँ हृदय म श्रुत भक्ति मेर,  
 किंकिडू नहीं कर रहा गुरु भक्ति से भी ।  
 पुण्यप्रधान उपदान त्रियान योगे,  
 माठू सरो सुकृणा कृणानिधान ! ॥४॥  
 देवाधिदेव सुगमिन्तु निनेश वीर ।  
 आधार एक जग में वम आपरा है ।  
 तीर्थेण गामनपते ! हगिपूज्य नाथ ।  
 स्वीय प्रमाद महिमा तिखलाइयेगा ॥५॥

१—उपधान म १—प्रभु आत्मा का पालन २—नपस्या से कर्मों  
 की निवारा ३—असार भूत शरीर म आत्म साधन रूप  
 सार प्रदृश्य ४—धन भक्ति ५—मद्गुरु भक्ति ६—इन्द्रिय  
 जय ७—मदर साधना आदि सदनुष्ठाप की परपरा  
 होता है ।

## चेत्यवन्दन--४ !

( गिरिणाद्यम् )

अनन्तात्म ज्योति प्रकट विभव प्रोड मदिमा,

विद्वान्द सृति प्रगुणगणमन्तीतिगरिमा ।

अरामी जडेपी परम मग्ता धाम ज्ञा में,

महाश्रीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥१॥

सुनाय भयो दो समप्रमरणे मिश्रततया,

तर्मा जतत्मा क विशदमिधिसे जेथ रुद्धके ।

उपादय-दय समुद्र चट-ह्यादिक जडे,

महाश्रीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥२॥

विना मा में जानादिक गुणमणिज्योतिगृही,

मिलेती हाजोमे नियम उपगत प्रतितया ।

इभो वागी सची 'हरि' सुन मुखो हो हिर जहो,

महाश्रीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥३॥

१ - अथ भासिड अरहासुत्त ग प्रति गणहग निरुणा । निर्युक्ति ।

२ - उपगत तप से सम्भरशत तान चरत आदि गुणा फी ज्योति प्रकटनी है ।

## नैत्यवन्दन-५ ।

( गौरीविरचितम् )

गौरी त्रिगुणं च स्रष्टव्या विद्वान्ना मया क्व,  
 एतन्मदं विवेकं च भविष्यति तत्रैव सिद्धता ।  
 । या नमसा नमो तु तव है मया या सेव्ये ही,  
 वैसा श्री विद्यादेव तापत्रयं नमो न्याशां प्रोसामया ॥१॥  
 एतां तन्मात्रं त्रैलोक्यं भिन्नं मया तं ननु यौ यति,  
 एतां च उपधानं मया गृह्यते च मक्तिं गामी मदी ।  
 । इदं त्रैलोक्यं तेषां तव पदं विनी नम्यते,  
 एतन्मदी विनीतं च स्वतः तेषां सुखं तव्या ॥२॥  
 यौ तु तं विप्रं तन्मया तन्मया कन्दलकाया मया,  
 ० श्रीमान्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया ।  
 गौरी तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया है,  
 तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया ॥३॥

नमो तव्यं इत्यन्तं मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया  
 तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया  
 तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया तन्मया



## स्तवन-१

( तर्ज - केसरिया धामु प्रात करो र सधा ) ।  
 सहारी चिन्दा स्वामी मुखरुदा मेरु भाव मे ॥ १ ॥  
 तप उपधान विधान नताया, ज्य रूप अरिहता ।  
 स्र रूप गू ये उपशरी, गणधर गुरु गुणगता रे । म० १ ।  
 बहुश्रुत अध्ययने श्री उत्तरा-व्ययने है श्रिजाग ।  
 महानिशीथ महामिद्वान्ते, सुनतविधिविस्तारा रे ॥ म० २ ॥  
 ज्ञानाचार सुभेद विचारे, ह उपधान विधाना ।  
 आराधक साधक भविभाव, धन धन पुण्य प्रधाना र ॥ म० ३ ॥  
 नरकाराडिक शुन धरो मो, शास्त्र कथित विधीयोगे ।  
 मद्गुरु मुख मे ग्रहण्य पर नर, नारी पुण्य प्रयोगे रे ॥ म० ४ ॥  
 'उप' का अर्थ निरुद मद्गुरु क, या अपने आत्म के ।  
 'धान' अर्थ आत्मका धारण, अर्थ यही गृहगम क रे ॥ म० ५ ॥  
 है उपधान महातम भारी, लाभ जोर अपारा ।  
 प्रभु तुम आशा पालन, करते भयसागर निस्तारा रे ॥ म० ६ ॥  
 गुरु गम विधि तप करते होती, कर्म निर्जरा भारी ।  
 पोषण करते मुनिपद तुलना, कर पाऊ बलिहारी र ॥ म० ७ ॥  
 पाचों इन्द्रिय जय कर पाऊ, करू कषाय निरोधा ।  
 सबर करणी करते निशदिन, पाउ निजपद नाधा रे ॥ म० ८ ॥  
 निद्रा निरुधा लेश न होय, जातम ध्यान बढाऊ ।  
 प्रभु परमात्म तुमपद सेवा, तनमन से लय लाऊ र ॥ म० ९ ॥

षडगति भीम मयङ्ग मरमे, मानव मय गुग्गाया ।  
 पाया मङ्गल करु प्रभु तुभ्यद, उपधान मन माया रे ॥म० १०॥  
 सुखमागर भगवान् तूही है, नित हग्निपूज्य हमेऽग्रा ।  
 दर्शन वन्दन स्पर्शन वन्दने, रहे न राम कनेऽग्रा ॥म० ११॥

## स्तवन—२ ।

( तत्र—जिज्ञाषी चक्षुःपुत्रोऽप्यत्र नमो सुखागर )

तारक तीर्थ नाथ नमू उपहास र रद्धमात्र भगवान् ।  
 कवल्गान विगणित नित श्रियागी र मुनान ॥ टर ॥  
 समरगन्ध म राह पग्निद आगेर वीतगग महान ।  
 तेष उपधान प्रधान विधान तु भाप र मुनाय ॥ ता० १ ॥  
 आत्म शत्रु राम महा दुखदायी र है अतिमलान ।  
 चिन तालाम न नीत मरु ना कोई रे मुनान ॥ता० २ ॥  
 तत्र परमात् विनाद परात्रम धारो र तन मन धिर टान ।  
 कर्म पगनय होत तय तय शगी रे मुनान । ता० ३ ॥  
 पायो ममसायी कारण मे जानो रे उद्यम परान ।  
 गुरु राम र उपधान मुमाधो मिद्धि रे मुनान ॥ ता० ४॥

१—वार्थ सिद्धि म कान स्वभाव नियति पूयकृत कम  
 धीर पुन्यकार ये ५ समावाधा कारण माने जाते हैं।

पचमगोत्र-श्रुतसन्ध सुनगल काशी रे परभट्टीस्थान ।  
 चिन जातम म ज्यक्त कगे प्रनयोमे र सुजान ॥ता० ५॥  
 प्रतिहमण श्रुत सन्ध समागजन से र तन पाप निदान ।  
 मय नताप ममाप्त सभी हो जाये र मुजान ॥ ता० ६॥  
 शकन्तर अध्वयन प्रभु गुणगा तो रे चढके गुण मन ।  
 उतरोत्तर प्रभु पारन पत्नी पायो र मुजान ॥ ता० ७ ॥  
 वैश्य स्तरन अध्ययन मनन जितन से र लट भवरीव्यान ।  
 करु आत्म परमात्म लय लागे रे मुजा ॥ता० ८ ॥  
 नाम मय जयजने चिन चौथीमी रे नीपन परमान ।  
 निजनीना उगति जित पगे भाव र मुजान । ता० ९ ॥  
 श्रुत स्तरन मिद्वर्तन गाजन तगत रे प्रस्टे विज्ञान ।  
 ज्योतिर्भय निमय तन्माय हो जागे र मुजान ॥ता० १०॥  
 गात करो उपधान सात भय भागे रे मुग्गमात प्रधान ।  
 चागे गुण जदुरागे शिखसुख जागे रे मुजान ॥ता० ११ ॥  
 मुत्तमागर भगवात परमपदगामी रे नामी अधधान ।  
 धन उपधात विधान रनाया ध्याउ रे मुजा ॥ता० १२॥  
 जित श्रि पूज्य सुतीग्धनाय तमामि रे ममविक्रमितप्रान  
 रदुमान भगवात धीर रजिहरी र सुजान ॥ ता० १३ ॥

०-चक्ररि मय । -इयागाह्या आर तम्सउत्तरी ।

१-गनु गुण । २-अरि० । ३-इयाग । ४-लोगम्भ ।

५-कुम्भनागवरे । ६-सहायबुद्धाय ।

## स्तवन—३ ।

(ता—२१२४ - ५-३१)

वाग् प्रभु श्री ममा योग रनाय हो,  
 मन भावे विरुग्णगुदुनित्यरु ।  
 वायग्ता मिट जाये गति अत्र हो,  
 मनमाय विरुग्णगुदुनित्यरु ॥ ४ ॥

प्रभु पद रु उपधान विरि विवादा हा,  
 इकाने प्रभु पद जान कर ।  
 गुणरतनो रा माग घोष रटाय हो,  
 गुणमायदोष माग करदद ॥ श्री० १ ॥

इरयो चोत्त वि उपधा वृता हो,  
 हो शग नूर रना प्ररु कर ।  
 सुप्रसायना तगद रर अतुय स हो,  
 गुरु राम मे टमति कर कर ॥ श्री० २ ॥

सुप्रभव तदभव निमय प्रम राणी हो,  
 गुणराणी अनलय माय सुना कर ।  
 जितन मनय निदिध्यापन जाविरामी हो,  
 परिणामा श्रानमसो र गोष कर ॥ श्री० ३ ॥

सूत्र ग्रहण की शक्ति यह उद्देश हो,  
 मत्रि शेषा समुद्देशे माय मरू ।  
 सूत्र पठन पाठन की पावन आज्ञा हो,  
 अनुना सदगुरुवर से प्राप्त करू ॥ गी० ३ ॥  
 महामत्र नत्रार सुमहिमा भारी हो,  
 अधिमारी साधू सहजे मिद्धि करू ।  
 पूर्व चतुर्दश मार भूत मुखकारी हो,  
 अत्रिकारी पाप ताप परिहार करू ॥ गी० ५ ॥  
 जातम गुण पोषक पौषध त्रतधारी हो,  
 निग्धारी निरतिचारतया विचरू ।  
 दिव्य देव उदन कर नित्यानन्दी हो,  
 निर्द्वन्दी सदगुरु सेव करू ॥ वी० ६ ॥  
 देहादिक ममता तन चिनपद ध्यानी हो,  
 गन मानी सी लोगम का ध्यान करू ।  
 परमेष्ठि गुणमाला विमर्शापीसे हो,

१—सूत्र ग्रहण की शक्ति को अर्थान्न सूत्रारंभ को उद्देश कहते हैं । २—सूत्र ग्रहण की विशेष शक्ति को 'समुद्देश' कहते हैं । ३—सूत्र पठन पाठन की आज्ञा को 'अनुज्ञा' कहते हैं । ४—उपधान म पौषध करना होता है । ५—सी लोगम का काउत्सग्य करना होता है । ६—० वधी नत्रकार याह जपनी होती है अथवा चीत्रविचार नत्रतत्त्वादिक प्रकरणां य २००० श्लोक प्रमाण त्राध्याय करना चाहिये ।

नित नीमे पिएडम्यादित्र भेद करू ॥३०७॥  
 दुर्म मानत्र भत्र म प्रमु पत्र सेरा हो,  
 मुत्र मेरा दती ई नित्य करू ।  
 ध्यात्रम परमात्रम पद पुण्य प्रराणे हो,  
 सुप्रियात्र अनत्र आनत्र मौत्र करू ॥३०८॥  
 मुत्रमात्र भगवान चीत्र जय रागी हो,  
 भयहारी मेरा करके अमय करू ।  
 तिन हरि पूज्य परमपत्र रे उपवाने हो,  
 गुणदाने ऊत्रे ऊत्रे चत्रा करू ॥ ३० ६ ॥



### स्तवन---४ ।

तत्र प्रमु धमनाथ माते एरा जगतीरा मोहन रात्र )  
 रात्र—दनभारा

महावीर प्रमु भगवान, नित वन्दू तिनय निधाना ।  
 प्रमुत्रा नरू उपवाना, तिन करू प्रमुपद ध्याना ॥३०९॥  
 स्वामी उपधान व्रताया, सद्गुरु गम त्रिभि मित्रलाया ।  
 मात मय मात भगाया, सुत्र ग्यात प्रवान उपाया ॥३०१॥  
 पहिले दज उपधाने, वर नदी रचना ठाने ।  
 दन वीम त्रिभुवन, त्रत माती चारह जाने ॥

शुभ पाच तीम जिन तीजे, प्रत भी उनीस करीने ।  
 चौथा दिन चार करीने, ढाड प्रत माघन कीजे ॥म०३॥  
 पंचम अडवीम गिनाया, प्रत साठी पनरह पाया ।  
 छठे छः दिन दिगलया, प्रत पाडातीन सुवाया ॥प०४॥  
 सप्तम उपधान सुहाया प्रत चाविहार इक गाया ।  
 अम सुविहिताया मर हाया, अतमगुण त्रिभु रटाया ॥म०५॥  
 अष्टी मत्र वाचना चागी कर; अतुपम अविहागी ।  
 नवमास उभय दिनागे, भवशासन तारणदार्मी ॥म०६॥  
 हो माघधान उपघात पारर प्रत पुठिड रिशाते ।  
 सो लीगम पावन ध्यागे, प्रभु माला तीन वाचन ॥म०७॥  
 उप आभ निरुक्त भे नाना कमा रा हय विगतो ।  
 'उपराण' अथ विगतो, विजयावन विद्धि विगतो ॥म०८॥  
 विन जाग पालन हाय, सुता माया शुभ हीर ।  
 फिर पाष तप मिट कर, सुखागत विगुद्धि उपाये ॥म०९॥  
 मुहा रा की धरमाया, पुनि ग्याया धरमाल ।  
 राम्ना रूप सुखागा, गणेशति म परम माग ॥म०१०॥  
 सुखमाग श्री भूमशाग, हायत पाति शर मगना ।  
 विन हग्निद्विता उपशाग गाग न प्रत्य कराता ॥म०११॥

---

१ - गीति ५॥ स्तवन ॥ सुता त्रिभुवन घटनाग  
 गान्धिका सुखाग गाग मर । अर्थ ।





आप वताया मोन उपाउ , मरु प्रभु उपधान रे ॥त्रि०७॥  
 मल जनादि कुयो मिराउ जातम रोध मिशोर ।  
 मर्म मरु मिटा अरुमी पाउ गुण अरिरोध रे ॥त्रि०८॥  
 प्रभु पद सेवा निनप टायरु शिव सपति निधान ।  
 मरु सुसोमल भार धरु नि-मातृ हो मापधान रे ॥त्रि०९॥  
 सुखमागर भगवान तुम्हा हो-शामन नायक वीर ।  
 हो मरु वरु म्या स्वामी सिगलादो तडवीर र ॥त्रि०१०॥  
 निन हरि पूज्य प्रभु तुम सेवा कर पाउ अपिराम ।  
 केरल मरु यही वर मागू मरु पुण्य गणाम रे ॥त्रि०११॥

### स्तुति—१ ।

श्री उर्द्धमान त्रिनेश जगन्धार शामन नाथ को ।  
 मरु निनय वन्दन क लिये मरु निनय नोट हाथ को ॥  
 प्रभु चरण म उपधान की जागयना मुखदायिका ।  
 मातृ मुखद रमालिका दती मय शिखनायिका ॥१॥  
 मदान के जागर मे उपधान भेद विशेष है ।  
 करत हुए गुरु रोध से मरु मरु होते क्लेश है ॥  
 होने हुए होंगे त्रिदालिक भार म उपधान से ।  
 जन सिद्ध जो वन्दू उन्हें शुभ मातृपूज्यवान ॥२॥  
 उपधान जय विशेष कमाया मय अरिहत ने ।  
 चरु यत्र मरु म्या मरु गणार गुरु गुणवतने ॥

उपधान घृचक घृत्र पावन अर्घ तद्गुमप सर्वदा ।  
 मुनवा रहूँ करवा रहूँ श्री सुगुरु गम पात्र मुदा ॥३॥  
 उपधान क मुनिधात में जो नाशधान बने रहें ।  
 मुनिमिपु वे भगवान पदवी अन्त में पाते रहें ॥  
 समष्टि देवी देवगण नायक हरि मरुट हरें ।  
 सपति मरें मुत्तफो फरें जप जप हमेशा उचरें ॥४॥

## स्तुति—२

अधिसार विना की वार्ते व्यथे अनेक,  
 अधिसारी वार्ते सरल सकल गरिबेक ।  
 चौदह पूत्र का मार मत्र नरशर,  
 अधिसारी होकर आराधू जयशर ॥१॥  
 सुविहित गुरु सेवा द अधिसार अशेष,  
 अधिसार वताया उपधाने मरिणेष ।  
 जो पुण्य प्रभावे पावें मावें भाव,  
 साधक सिद्धातम वदू निनगुणदात्र ॥२॥  
 उपधान वताया मात भेद सिद्धान्त,  
 आराधन करते भय भागे एकान्त ।  
 श्रीमहानिशीवे उतराज्ञयणमरूप  
 गर गम आगृ दूर रू मररूप ॥३॥  
 हरि पृथित श्रीनिनशासन धामित देव,  
 उपधानी जननी आप्त हो मरैव ।

सुरमणि मन्तरु भी मुलम रूप हो जाय,  
प्रमुदित हो जगजन पावन कीरति गाय ॥४॥

### स्तुति—३

शामन पति उद् महावीर मगवान,  
प्रभु मममरणमे उपदेशे उपधान ।  
आराधक भविनन यथाशक्ति आराध,  
मिद्धिमतिपारं निनमुख अव्यापध ॥१॥

उपधान रताय नात, अनरु प्रभार,  
आराधन सिधि भी यथायोग्य अधिकार ।  
साधक जन माघे कर्म रोग मिट जाय,  
निनपद परमष्टी पावन गुण प्रकटाप ॥२॥

जीवा जीसादिक तच्चारथ उपयोगी,  
बारह उत धारी दशमिरतिगुण भोगी ।  
उपधान विधानी होते हैं गुणरागी,  
जिन आगम गाव जीवन में बडभागी ॥३॥

सुखसागर सचा पद उपधान प्रधान,  
आराधरु होते अतगति मगवान ।  
जिन हरि पूनित पद सेर देवी देव,  
दख दोहग टाले सुख पूरे स्वयमेव ॥४॥

## स्तुति—४ ।

निन आता पालन-सर साधनयोग,  
 सुप्रत आराधन आतम गुणउपयोग ।  
 उपधाने होते भापें श्रीभगवान्,  
 महावीर निनेश्वर वदू निनय निवान ॥१॥  
 अतिचार विना की क्रिया कारण रूप,  
 करते नो मनिनन होने त्रिभुवन भूप ।  
 सन कर्म रूपा कर परमात्म पद आप,  
 प्रगटायें रन्दू मिद्ध चगत मात्राप ॥२॥  
 श्री पचमगलश्रुत-संधानिक है सात,  
 उपधान कर्णसे मागे भय भी सात ।  
 सुखमाता प्रस्टे यथाशक्ति अभिराम,  
 जिन आगम बोले प्रात करू प्रणाम ॥३॥  
 सुखमागर प्रमुख महावीर भगवान्,  
 निन हरिपूज्येश्वर उपदेशा उपधान ।  
 आराधे उनके रोग शोक मताप,  
 समस्त दृष्टि मुर मटे वटे प्रताप ॥४॥

## स्तुति—५ ।

उप निरुद्ध सुगुरु के ज्ञानादिक गुणधाम,  
 आत्म का धारण धान अर्थ जमिगम ।

करमात्रे प्रभुवर वीतराग अरिहत,  
 नित वन्दू भात्रे थी जिनवर जयवत ॥१॥  
 उव आतम निकटे हाण कर्म की साध,  
 उवहाण जरथ यह समरथ अब्यासाध ।  
 जो पात्रे आतम परमातम पद रूप,  
 वदू नित उनको मत चित ज्योतिसरूप ॥२॥  
 वीसड दो भाखे वर पतीमड एरु,  
 जहावीसड चउ छरुड एरुड एक ।  
 सनिवक समाराधन जिन आगम सार,  
 वन्दू आराधू पाउ पद अनिसार ॥३॥  
 मातों उपधाने सुसमागर भगवान,  
 निनहरि पूज्यश्वर करमाया करमान ।  
 आराधो मनिनन देवी देव हमेश,  
 सत्र चिंता चूर चितित दे सविशेष ॥४॥

इति उपधान तप चैत्यवन्दन-स्तवन  
 स्तुति सग्रह समाप्त

# श्रीमहावीर सप्तविंशति भव वर्णन ::

## ॐ बृहत् स्तवन ॐ

दोहा -

श्री महावीर तिनैट्र को, नमन करू पित लाय ।  
भर सतासीस में करूँ, मुख कर गुरु सुपमाय ॥

### ढाल १

धर्दमान तिनथर तणानी चरण नमू चिननाय ० (इस तज में)  
भरिकननरी चरित चितवार, वरलो ममकित मार म० ॥१॥  
पश्चिम महापिदेह मे जी, "नयमार" नाम मुखार ।  
काष्ठ ररण रण में गयोनी, लागी भूख अपार ॥भरि० ॥१॥  
भोजन करने के लिये जी, बैठे तरार छाइ ।  
ततखिण मन परिणित हुई जी, पामी हर्ष उछाह ॥भरि० ॥२॥  
अतिथि जो आये यहा जी, होवे जातमशुद्ध ।  
माग्य उच्य हो मारो जी, देऊ दान विशुद्ध ॥भरि० ॥३॥  
मारग सम्मुख देखते जी, बैठे "श्री नयसार" ।  
माग्य सयोगे भेटियानी पथ चूके अणगार ॥भरि० ॥४॥  
मन म हर्ष धरी करी जी, पहुँच्यो मुनिवर पास ।  
घन्य घड़ी दिन आज है जी, पूगे मुझ मन आण ॥ भरि० ५॥

मार देख "नय मार" के जी, आये मुनि महाराज ।  
 शुद्धमान आहार जो जी, लेवें सयम काज ॥ भवि० ६॥  
 मय जीय तत्र जान क जी, दर्श गुन उपदेश ।  
 समकित मोती उरघयों जी, छीप स्वाति जल लेश ॥ भवि० ७॥  
 द्रव्य मार मारग लहेजी तापु "श्री नय सार" ।  
 मापु मग मापुता जी, प्रकृत है निर्धार ॥ भवि० ८॥  
 भर पहिले समकित लपोनी गीने मय 'देवलोक' ।  
 पहिले एक पन्थोप म जी, 'हरि' मुख पावे अशोक ॥ भवि० ९॥

दोहा—

सौधर्मा मुर लोक में, भोगरी मुख अपार ।  
 'दक्षिण' भग्ते अरतया, श्री नयमार मुखार ॥

ढाल २

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी० (इस तर्ज में)

निन्तिता नगरीर "चक्री भरत" के, घर में लियो अरतारजी ।  
 नाम दियो गुम "भरिची" तात ने, उत्तम पूर्वक सारजी ॥  
 देखो २ रे करम तणी गति, भूलादे निज मान जी दे० ॥ देर ॥  
 बाल कालकोर छोड युग भयो, करे अनेक विलास जी ।  
 एक दिन रन्दन आदि चिनद गयो, पायो बोध विज्ञास जी ॥  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १ ॥

वैराग रग रे दिक्षा ले मडा, सेवे श्री निननाथ जी ।  
तीत्र तपस्या रे शरीर सह नहीं, जाणी छोडे माथ जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ २ ॥

हो एगामी र मन में चितवे मैं मरु नृत्तन चाल थी ।  
हाथ कमण्डलु मिर छत्री धर, पग चाखडी गले माल जी ॥

दरयो २ र करम तणी गति ॥ ३ ॥

हाथ त्रिन्ट र भगवा वेप में, रागि हुआ जेण पित्त जी ।  
मुड मुडावे रे चोटी मिर धरे, राखे यज्ञोपवीत जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ४ ॥

स्नान करे और जाप जपे मही, आदि निनट्र त्रिशाल जी ।  
कन्द मूल रा रे नित मक्षण करे, करे समञ्जित मभाल जी ॥

दरयो २ रे करम तणी गति ॥ ५ ॥

प्रभुनी के पीछे र पीछे रहे मडा, मिचर देश विदेश जी ।  
ममयगरन सत्र सुरपति जत्र कर, बैठे यहिर प्रदेश जी ॥

दरयो २ रे करम तणी गति ॥ ६ ॥

आथ कोई रे वन्दन कारणे, दे मच्चा उपदेश जी ।  
मयम रगे रे रगी भात्र से, भेजे प्रभुनी के पास जी ॥

देखो २ र करम तणी गति ॥ ७ ॥

करते पावन अयनीतल प्रभु, थावे नगरी 'पिनीना' जी ।  
भगवादिक् मत्र नरसुरर मिलि, वदन करे इक चित्ता जी ॥

दरयो २ रे करम तणी गति ॥ ८ ॥



घदन करके रे निज धानक प्रति, बैठे भरत सनूरजी ।  
बार परसदा र रैठी देख क, पूछे भूप पहर जी ॥

देखो ० रे करम तणी गति ॥ ६ ॥

आप ममान रे फोर्ड जीव है, सपमरन मभार जी ।  
भापे प्रभु जी रे घहिर है सही, मिरची नाम कुमार जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १० ॥

चौर थार के हीगा अन्त में चोरीयम "श्री धीर जी" ।  
'क्षत्रिय कु ड' रे 'मिद्वारय' घरे, 'त्रिशला' नन्दन धीरजी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ११ ॥

श्री मुख बाणी रे 'भरत' सुणी करी, पाया हर्ष अपार जी ।  
मरिचि निकट में रे जावे प्रेम से, बोले बचन उदार जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १२ ॥

तू वामुदेव रे पहिलो भरत में, मुकाविचये चकरी ची ।  
फिर तू हीगा रे जिन चोरीसभो, महावीर नामे नकी ची ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १३ ॥

पहिली दूती रे पदवी को नहीं, नाही तिदडी वेप जी ।  
थी तीर्थ सर पद को मैं नमू, मुन श्री निन उपदेश जी ॥

देखो २ र करम तणी गति ॥ १४ ॥

वन्दन करके रे भरत घरे गयो, सन कर नाचे मरिची जी ।  
घन २ मुन को रे घन मुन वश जो घन मुक्त करणी ऊचीनी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १५ ॥

मेरे दादा रे तीर्थ कर हुए, तात हुए मुज चक्री जी ।  
उन दोनों से रे अधिमा मैं हुआ, रामुदेव पद चक्री जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १६ ॥

तीर्थ कर की रे पदवी मुझको, होगी विमरा बीस जी ।  
तीनों पदवी को मैं भोग के, लूंगा मुक्ति जगीश जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १७ ॥

नाचकूद क रे कूलको मद कर्या, नायो कर्म को उध ची ।  
'हरि' कह ताते रे होगा देखना, नीच गोत्र सम्बन्ध जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १८ ॥

दोहा—

बहुत समय क बाद में, उपना रोग शरीर ।  
वैयाचक क कारणे, घोलाव मुनि धीर ॥१॥  
देख त्रिदही वेष को कोई न पूछे सार ।  
उद्वेगी हो कर करे मन मे खूब विचार ॥२॥

ढाल ३

भेख रे उतारी राजा भरथरी० ( दस तर्ज में )

स्वारथ का ससार है, स्वारथ विन नहीं कोय जी ।  
रोग हुआ मुझ अग में, कोई न पूछे आय जी ॥  
पञ्चाचाप करे घणो, करतो हृदय विचार जी ॥ टेरे ॥  
अप जो मुझ साता हुवे, तो शिष्य करू दो चार जी ।

शिष्य दिनाभगात् मे, होरे न करे उरुधात् जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ १ ॥

रोग गयो साग बुद्ध, जाया करीन बुद्धा जी ।  
उपेग दे के भोग्यो, समसमान मन्त्रा जी ॥  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ २ ॥

अपम दिनन्द वन्दन रगी, देगे अदि रिक्ता जी ।  
धर्म नदी यद गातु को, जिनम गुर अदि मा जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ ३ ॥

पीला आय करीन कडे, तुमही यदो हुर धर्म जी ।  
यदी तो बुद्ध भी है नदी, मगात् ताव मर्म जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ ४ ॥

मन मे हर्ष घरी कडे, मरिची गुणो करीन जी ।  
सन्ध परम तुम की कहे, होदो जगत् जगत् जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ ५ ॥

वप घगयो वाप को, मन करीन को धर्म जी ।  
कोज कोटी गागा मित, मर पर्दरवाषा धर्म जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ ६ ॥

साव घांगरी पूर पा, भोगरी आपुव्व धर्म जी ।  
मर तीजा पूर पते, वाव पाचर धर्म जी ।  
पद्मनाभ करे पत्नी ॥ ७ ॥

चोये दश मागर महा सुख भोगी सुर लोक जी ।  
पाँवें कोल्लाक ग्राम म, हुआ राहण कौशिक जी ॥

पञ्चात्ताप करे घणो ॥ ८ ॥

आयुष अस्मी लाख को, त्रिदण्डी ले भेस जी ॥  
छठ्ठे मन फिर दिन हुआ, रहतर पूरन लाख जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ ९ ॥

त्रिण्डी माधु हुआ, गुणा नगरी महार जी ।  
मरक सातवें भव गया, कल्प सुप्रमा मार जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ १० ॥

अग्नि धान द्विज आठमें, साठ पूरन लाख जाय जी ।  
त्रिण्डी नव में मही, दूजे देन में जाय जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ ११ ॥

दशमं मन मन्दिर पुरे, अग्नि भूति द्विज नाम जी ।  
छप्पन पूरन लाख में, त्रिण्डी मयो नाम जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ १२ ॥

इयारम मन गुर भयो, तीने सनत कुमार जी ।  
अर श्वताम्बीनगरी में, भारद्वाज द्विज मार जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ १३ ॥

चालीस लाख पूरन भलो, नार में त्रिण्डीनाण जी ।  
मरक चौथे महन्द्र म, तेरम भवगुण राण जी ॥  
पञ्चात्ताप करे घणो ॥ १४ ॥

राजगृह में डिज हुआ, धारर लाख चोरीश जी ।  
 पूर्व आयुत्रिदण्डीयो, चौदवें मर सुजगीश जी ॥  
 पश्चात्ताप करे घणो ॥ १५ ॥

पनरम ब्रह्म म अरतयों, सौलम विश्व भूति जीर जी ।  
 विद्यानन्दी घर जमियो, धारणीकुची से दीव जी ॥  
 पश्चात्ताप करे घणो ॥ १६ ॥

वीर चरित शुभ भाव से, हरि गावे गुण धाम जी ।  
 सार विचार सुधार के, पायो शिव आराम जी ॥  
 पश्चात्ताप करे घणो ॥ १७ ॥

दोहा—

बाल काल को छोड़ के, मयो युवान कुमार ।  
 बाडी म सुख भोगवे, नित प्रति सुर समसार ॥ १ ॥  
 देखी राज कुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल ।  
 जाय पिता को यों कहे, दो बाडी ततकाल ॥ २ ॥  
 शात करे निज पुत्र को, सोचे भूप उपाय ।  
 विश्व भूति को भेजता, बश कारण सिंह राय ॥ ३ ॥  
 जीत परुड़ लाया दिया, निज चाचे के हाथ ।  
 बाड़ी में जाने लगा, जय कीरति के साथ ॥ ४ ॥  
 द्वार पाल तर यों कहे, रहते राज कुमार ।  
 नहीं जा सकते आप अर, तब जाने छल सार ॥ ५ ॥

पुन' क्रोध से वह रुहे, सुन लेना नर नार ।  
 बरा भ्रम मैं ना करू, नहीं तो क्या है भार ॥ ६ ॥  
 चूरे वृद्ध कमीठ का, दे क' मुष्टि प्रहार ।  
 निन दुश्मन को चूरते, लगे जु इतनी बार ॥ ७ ॥

### ढाल ४

माना फाटे र जाला जान का० ( इस तर्ज म )

तुम देखो भाई गहन गति रे गतिचार की ॥ टेरे ॥  
 सभूति गुरु पाम मेरे जा कर दिवा लीघ ।  
 तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रमिद्ध जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १ ॥

त्रिचान्ता अपनीतलेरे, मथुरा पुर में जाय ।  
 मौरै ज्यों गोचरी फिरते को, पाड़े दौड़ी गाय जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ २ ॥

मिशाख नन्दी भाई चचेरा, हम कर बोले जानी ।  
 कमीठ फल बल गयो कदा रह, अरे महा अभिमानी जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ३ ॥

सुन कर सापु परिणति पलटी, क्रोध हुआ विम्वराल ।  
 गाय घुमाई सींग पकड कर, छोड दिई मभाल जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ४ ॥

देखा बल अत्र तप फल, हो तो पूरव मन निर्धार ।  
 मारू मैं तुझको यों कहते, विष्णुभूति अणगार जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ५ ॥

रर निदान अनशन करीर, महा शुक्र में जाय ।  
 सतरह में मन म सुखरिलसे, उत्कृष्ट स्थिति पाय जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ६ ॥

पोतन पुर नृप प्रतापति की पुत्री रत्न कुची ।  
 मन अष्टादश में वह जनमा, मत्त सुपन की साक्षी जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ७ ॥

विशाम्य नन्दी जीरसिंह से, मारी वासुदेव ।  
 त्रिष्टु नामे हुआ भरत में, करता सुरनर सेव जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ८ ॥

पाप पुष्ट उन्नीमम मन में, सप्तम नर के जाय ।  
 वीमम भय में, भीम भयङ्कर, सिंह हुआ बन राय जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ९ ॥

इक्षीसम मन चोधी नरक से, निरुल फिरे ससारा ।  
 वाईसम भय साधारण नर, पुण्य किया त्रत धारा जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १० ॥

तेईसम मन राय धनञ्जय, धारिणी कुरे जाय ।  
 चौद सुपन अचित श्वतरिया, प्रिय मित्र चक्रीराय जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ ११ ॥

दृष्टीलाचारन से दीक्षा, शीघ्रा युत ले पाले ।  
 र्प कौटि मयम आराधी पाप पुञ्ज को बाले जी ॥

तुम देखो माई ॥ १० ॥

हागुरु में चौरीमममत्र, सुर पदवी सुखकारा ।  
 वरीमम मत्र में फिर होवे, नन्दन रानकुमारा जी ॥

तुम देखो माई ॥ १३ ॥

क्षा पोटील छरि से ले, वीम पदों को घ्यावे ॥  
 र्थेश्वर नाम जपन कर, भाव दया दिल भावे जी ॥

तुम देखो माई ॥ १४ ॥

ख वर्ष चारि पालते, याजनीय उदारा ।  
 म खमण से कर पारणा, धमा महित हितकारा जी ॥

तुम देखो माई ॥ १५ ॥

लाख पञ्चीस करे, आयुष अपना भोगी ।  
 र्ति फहे नित वन्दु नन्दन, महा तपस्वी योगी रे ॥

तुम देखो माई ॥ १६ ॥

दोहा—

प्राणत नामक स्वर्ग में, पुण्योत्तर सुविमान ।  
 श्वन्वीसम भव में वहां, सुर सुरनाथ समान ॥१॥

देव लोक सुख भोगते, करते पुण्य विधान ।

जिन यात्रा स्नानादि में, किया यह पञ्चकान ॥२॥



वीस सागर आयुस्थिती, पूर्ण मई जर सार ।  
 व्यसन दु ख नहीं जानते, तर व्यवते निर्धार ॥३॥  
 व्यन कन्यानक क समय, भुवन भयो कन्यान ।  
 पुण्यदान जारे जहां प्रवृत्ते वहा निधान ॥४॥

## ढाल ५

“राग—गुजराती गरथा पद्धति”

भनिया वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारनारे ।  
 भीषण भय सागर से कैसे पावे पार ॥  
 इस का वीर चरित में खूब क्रिया विस्तार ।  
 आत्म परिणत कर निज कर्म विचार विचारना ॥देरा  
 साखी—पूर्व गौरमद करन से, नीच गौर कर बन्ध ।  
 सचागत उस कर्म से, हुआ उदय सम्बन्ध ॥  
 सचावीसम भव ब्राह्मण ब्रुल में, अस्तारना रे ।भवि०  
 साखी—“ब्राह्मण कुण्ड” सुगांव में “श्रृपमदत्त” वरनाम ।  
 “देवानदा” ब्राह्मणी, तस गृहिणी गुणधाम ॥  
 करती चौदसुपनलस, दिव्यगरम प्रतिपालनारे ।भवि०  
 साखी—शक्रसिंहासन थरदर्यो, जाने च्यवन सुरिंद ।  
 सात आठ पग सामने, जा पन्दे जिन चन्द ।  
 शक्रस्तय की सविनय शक्र करे उचारनारे ॥भवि०

- साखी-पूर्वामिषुग मिहामने, चन्दन ककके इन्द्र ।  
 बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष शलारा वृन्द ॥  
 मिच्छादिक नीउ कुलमे, जन्म न लें निर्धारनारे । भवि० ४ ।
- साखी-हरिण गमेपी देव को, हुकम करे सुरराय ।  
 क्षत्रिय कुण्ड सुगाम म, श्रीमिद्धरथराय ॥  
 त्रिशलादेवी कुक्षि श्रीचिन को मचारनारे । भवि० ५ ।
- साखी-हरिण गमेपी दन तर, दिव्य गति को धार ।  
 देवानन्दा वृष से, करे प्रभु थपहार ॥  
 दूजा गर्भ हरण कन्याणक शास्त्रा धारनारे । भवि० ६ ।
- साखी-मिहादिक चौदह सुपन, देखे परम उदार ।  
 त्रिशला निजपतिसे वदा, सुनती स्वप्नविचार ॥  
 होगा चक्री वा तीर्थङ्कर सुन सुखकारनारे । भवि० ७ ।
- साखी-त्रीते नौ महीने उपर, दिन जब साडे सात ।  
 हस्तोत्तर नक्षत्र में, वनमे त्रिभुवन तात ॥  
 तीजा जन्म कन्याणक, तीन भुवन जयकारनारे । भवि० ८ ।
- साखी-छप्पन दिशा कुमारिया सति कर्म कर जाय ।  
 सुरपति सुर सह सुरागिरी स्नात्र महोत्मव ठाय ॥  
 सुरपति शरा स्वामी करते, दूर निगारनारे ॥ भवि० ९ ॥
- साखी-सिद्धारथ दश दिन करे, उत्सव विविध प्रकार ।  
 छाती गोत्री निमा कहे, वर्द्धमान गुणधार ॥  
 सुत है, वर्द्धमान शुभनाम इसे स्वीकारनारे ॥ भवि० १० ॥

- साखी-यौवन वय नृप पुत्रिका, परणे भोगे भोग ।  
 अद्वारीसम वर्ष मे, माता पिता सुरलोक ॥  
 होते पूर्ण अभिग्रह, होती दीक्षा धारणारे ॥ भवि० ११ ॥
- साखी-नन्दी वर्द्धन घन्धु के आग्रह से दो वर्ष ।  
 साधुत्व समार मे, नहीं शोक नहीं हर्ष ॥  
 करते दान मन्त्सर से, दारिद्र्य विदारणारे ॥ भवि० १२ ॥
- साखी-जय नन्दा भद्रा कहे, लोकान्तिक तन देव ।  
 तीर्थ प्रवर्तन को करो, हे स्वामी स्वयमेव  
 ज्ञाता स्वामी हैं तो भी, उनकी आचारणारे ॥ भवि० १३ ॥
- साखी-नन्दी वर्द्धन इन्द्र सह, करे दीक्षोत्सव सार ।  
 द्रव्य भाग से लोच कर, तब होते अनगार ॥  
 यह चउज्ञान तथा कल्याण की सहचारनारे ॥ भवि० १४ ॥
- साखी-एकानी योगी हुए, छठ तप के धारी ॥  
 बार वर्ष छात्रस्थ्य में, दुःख सहें मारी ॥  
 जिनमें शूलपाणि सगम, कटपुतना धारनारे ॥ भवि० १५ ॥
- साखी-धाति करम के नाश से, प्रकटा केवल ज्ञान ।  
 तिसमय भावी भाग को, तन जानें मगवान ॥  
 पचम कल्याणरुमें करते, 'हरि' नित घन्दनारे ॥ भवि० १६ ॥

दोहा —

हृन्नीचर नशत्र में, ये कल्याणक पत्र ।  
स्वाति में निराण पद, छोड़ें मय परपत्र ।

ढाल ६

सिद्ध चक्र पद वदोरे भविष्य- (राग आगरा)

श्री निन वीर नमामी रे भविष्य, श्रीनिनीर नमामि ।  
केवल गान निवारत स्वामी, श्री निन वीर नमामि ॥ टेर ॥  
समयमरण सुर वर रचेरे, जह राजे निन चन्द्रा ।  
श्रमृत वाणी पीरत प्राणी, पावन परमानन्दारे ॥ भवि० १ ॥  
शक्ति पडित धात्रण इन्द्र-मृयादिक टग ष्व ।  
गणवर गुणवर होते भारी, पात्र वीर विरकर ॥ भवि० २ ॥  
मय चतुर्विध मद्गुण मानन, वापन कर सुख कारा ।  
द्विविध चउविध धर्म प्ररूप, शाराधक भवपारार ॥ भवि० ३ ॥  
अन्तिम चउमामी प्रभु पावन, पारापूर पवाररे ।  
मोठ प्रहर तर उपदशामृत-वर्ष अखडित धारर ॥ भवि० ४ ॥  
कर्म विपादोदय प्रसृती के, भविजन गुण्य सहाई ।  
शरण योगेकाग्न प्रकटे, यह अनुभव थिर थाईरे ॥ भवि० ५ ॥  
चौदश में गुणठाणे स्वामी, पुद्गुल बन्ध विपोगी ।  
शैलेशी करणे करी होते, शिव रमणी के भोगी रे ॥ भवि० ६ ॥

काती शरण्य ध्याति नक्षत्रे कल्याणक विराली ।

मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे ॥ भवि० ७॥  
 भावोद्योत जिनेश्वर के दिन, थी अम्मात्रय काली ।  
 गण राज विरचत तत्र जगमें, द्रव्योद्योत दिवाली रे । भवि० ८  
 आदिम गौतम गणधर स्वामी, वीर विभु पटधारी ।  
 देव मुखे निर्वाण सुने तत्र शोच करे अति भारी रे भवि० ९॥  
 मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली ।  
 केवलज्ञान रवि तत्र प्रकटयो, प्रकटी अद्भुतलाली रे भवि० १०।  
 आय 'हरि' उत्सव तत्र रचते, करते जय जय कारी ।  
 गौतम वीर प्रभ नित नमते, सधमें मगलाचारीरे । भवि ११

### कलश

अति स्वच्छ सरतरगच्छ मे सवेग रंग विराजते ।  
 श्री सद्गुरु सुख सिंधु विभु भगवानसागर गात्रते ॥  
 तस शिष्य हरि सागर गणी उच्चीस तें त्यासी समे ।  
 बेरावले श्रीवीर भद्र गाते विनय हो सध में ॥

## वीस स्थानक सक्षिप्त विधि

शुभ मुहूर्त म सद्गुरु के पाम नदी म्थापन पूर्वक वीम स्थानक तप लेना चाहिये । वीम पदों की वीस ओली होती हैं । प्रत्येक पद का अष्टम से छठ से चौबिहार उपराम से यान्त्र आयबिल एकामनादि से आराधन होता है । दो मास से छह मास म वीम-वीस यथाशक्ति अष्टम आदि तप पूरे करने होते हैं । वीम वीम माला प्रति पद में गिननी होती है । आचार्य उपाध्याय विवर-साधु-चारित्र गौतम तीर्थ इन साठ पदों में पौषष अवश्य करना चाहिये । गुणानुवाद, आरभत्याग, गुरु-देव भक्ति एव आत्मचितन मिशपतया करना चाहिये । पद गुण के भेद प्रमाण सरया में लोगस्म का कायोन्मर्ग एर नमस्कार करने चाहिये । मृतरु-जातरु-मृतरु-म्री घम आदि में तप नहीं गिना जाता । छहमास में उपा ओली नहीं होती ।

### श्री अरिहत पद नमस्कार १ ।

- १ अशोरशृच प्राविहार्य संयुताय श्रीअर्हते नमः ।
- २ पुष्य वृष्टि " " "
- ३ दिव्य ध्वनि " " "
- ४ चामर युग " " "
- ५ मिहामन " " "

|    |               |        |   |   |
|----|---------------|--------|---|---|
| ६  | भामण्डल       | "      | " | " |
| ७  | दु दुमि       | "      | " | " |
| ८  | छत्रत्रय      | "      | " | " |
| ९  | अपायापगमातिशय | सयुताय |   |   |
| १० | पूजातिशय      | "      |   |   |
| ११ | वचनातिशय      | "      | " |   |
| १२ | ज्ञानातिशय    | "      |   |   |

ॐ ह्रीं एमो अरिहताण-माला २०

श्री सिद्धपद नमस्कार २ ।

(१)

|   |                                      |    |
|---|--------------------------------------|----|
| १ | उह मस्वान रहिता श्रीमिद्धाय नम ॥ ६ ॥ |    |
| २ | पाच त्रण                             | ५  |
| ३ | दो गध                                | ७  |
| ४ | पाच रम                               | ५  |
| ५ | आठ स्पर्श                            | ८  |
| ६ | तीन षद                               | ३  |
|   |                                      | ३१ |

(२)

|   |                                           |
|---|-------------------------------------------|
| १ | मति गानाभणीय कर्म रहिताय श्रीमिद्धाय नम । |
| २ | श्रुत                                     |

|    |                      |   |   |     |
|----|----------------------|---|---|-----|
| ३  | अरधि                 | " | " |     |
| ४  | मन पपेव              | " | " |     |
| ५  | केवल                 | " | " | १५। |
| ६  | निद्रा दर्शना वर्णीय | " | " |     |
| ७  | निद्र निद्रा         | " | " |     |
| ८  | प्रचला               | " | " |     |
| ९  | प्रचला प्रचला        | " | " |     |
| १० | स्त्यानर्द्धि        | " | " |     |
| ११ | चतु                  | " | " |     |
| १२ | अचतु                 | " | " |     |
| १३ | अरधि                 | " | " |     |
| १४ | कवल                  | " | " | १६। |
| १५ | सोता वेर्णीय         | " | " |     |
| १६ | जमाता घदनाय          | " | " | १७। |
| १७ | दर्शन मोहनीय         | " | " |     |
| १८ | चारित्र मोहनीय       | " | " | १८। |
| १९ | नरकायु               | " | " |     |
| २० | तिर्गगायु            | " | " |     |
| २१ | मनुष्यायु            | " | " |     |
| २२ | दवायु                | " | " | १९। |
| २३ | शुभ नाम              | " | " |     |
| २४ | अशुभ नाम             | " | " | २०। |



|    |              |   |   |           |
|----|--------------|---|---|-----------|
| २५ | उच्चै गोत्र  | " | " |           |
| २६ | नीचै गोत्र   | " | " | २         |
| २७ | दानान्तराय   | " | " |           |
| २८ | लामान्तराय   | " | " |           |
| २९ | भोगान्तराय   | " | " |           |
| ३० | उपभोगान्तराय | " | " |           |
| ३१ | वीर्यान्तराय | " | " | ५         |
|    |              |   |   | <u>३१</u> |

ॐ ह्रीं एमो सिद्धाण—माला २०

### श्रीप्रवचन पद नमस्कार ३ ।

|    |                                            |     |
|----|--------------------------------------------|-----|
| १  | सर्वत प्राणातिपात विरताय श्री प्रवचनाय नमः |     |
| २  | सर्वतो मृषावाद                             | " " |
| ३  | सर्वतो अदत्तादान                           | " " |
| ४  | सर्वतो मैथुन                               | " " |
| ५  | सर्वतः परिग्रह                             | " " |
| ६  | देशतः प्राणातिपात                          | " " |
| ७  | देशतो मृषावाद                              | " " |
| ८  | देशतो अदत्तादान                            | " " |
| ९  | देशतो मैथुन                                | " " |
| १० | देशतः परिग्रह                              | " " |

|    |                            |    |
|----|----------------------------|----|
| ११ | त्रिंशत्परिमाण त्रवयुक्ताय | ”  |
| १२ | मोगोपमोग परिमाण            | ”  |
| १३ | अनर्थच्छन्द रिक्ताय        | ”  |
| १४ | मामायिक सहिताय             | ”  |
| १५ | देशवगासिक                  | ”  |
| १६ | पोपहोपनाम                  | ”  |
| १७ | अतिथि सन्निमाग             | ”  |
| १८ | त्रिधि सूत्रागमाय नम       | ”  |
| १९ | वर्ण सूत्रागमाय            | ”  |
| २० | भय सूत्रागमाय              | ”  |
| २१ | उत्तर्ग सूत्रागमाय         | ”  |
| २२ | अपराद सूत्रागमाय           | ”  |
| २३ | उभय सूत्रागमाय             | ”  |
| २४ | उद्यम सूत्रागमाय           | ”  |
| २५ | सर्वनय समूहामक प्रवचनाय    |    |
| २६ | सप्तभगी रचनात्मकाय         | ”  |
| २७ | द्वादशांगी गणिपिटनाय       | नम |

## श्री आचार्यपद नमस्कार ४ ।

|    |                                        |   |   |
|----|----------------------------------------|---|---|
| १  | प्रतिरूप गुण वारकाय श्री आचार्याय नम । |   |   |
| २  | तेजस्वी गुण                            | ” | ” |
| ३  | युगप्रधान गुण                          | ” | ” |
| ४  | मधुर रस्य गुण                          | ” | ” |
| ५  | गम्भीर गुण                             |   |   |
| ६  | धैर्य गुण                              | ” | ” |
| ७  | उपदेश तत्पराय                          | ” | ” |
| ८  | अपरिश्रावि गुण                         | ” | ” |
| ९  | सौम्य गुण                              | ” | ” |
| १० | अभिग्रह धराय                           | ” | ” |
| ११ | अनिरुथ गुण                             | ” | ” |
| १२ | अचपल गुण                               | ” | ” |
| १३ | सयम शील गुण                            | ” | ” |
| १४ | प्रशान्त हृदयाय                        | ” | ” |
| १५ | क्षमा गुण                              | ” | ” |
| १६ | मार्दव गुण                             | ” | ” |
| १७ | जार्ज्व गुण                            | ” | ” |
| १८ | निलम्बिगुण                             | ” | ” |
| १९ | तपो गुण                                | ” | ” |
| २० | मयम गुण                                | ” | ” |

|    |                   |         |   |
|----|-------------------|---------|---|
| २१ | मत्प्यवर्म        | "       | " |
| २२ | शौच गुण           | "       | " |
| २३ | अभिन्चन           | "       | " |
| २४ | ब्रह्मपर्य        | "       | " |
| २५ | अनित्यभाषना       | भाषिताय | " |
| २६ | अशरण भाषना        | "       | " |
| २७ | समाप्त भाषना      | "       | " |
| २८ | एकव्य भाषना       | "       | " |
| २९ | अन्यत्र भाषना     | "       | " |
| ३० | अशुचि भाषना       | "       | " |
| ३१ | आश्रय भाषना       | "       | " |
| ३२ | सप्त भाषना        | "       | " |
| ३३ | निर्जरा भाषना     | "       | " |
| ३४ | लोक स्वरूप भाषना  | "       | " |
| ३५ | बोधि दुर्लभ भाषना | "       | " |
| ३६ | दुर्लभ वर्मभाषना  | "       | " |

ॐ ह्रीं णमो आयरियाण—माला २०

## श्री स्थविर पद नमस्कार ५ ।

- |    |                                       |     |
|----|---------------------------------------|-----|
| १  | लौकिक स्थविर दशरूप लोकतर स्थविराय नम. |     |
| २  | देश स्थविर                            | " " |
| ३  | ग्राम स्थविर                          | " " |
| ४  | कुल स्थविर                            | " " |
| ५  | लौकिक कुल स्थविर                      | " " |
| ६  | लौकिक गुरु स्थविर                     | " " |
| ७  | लोकोत्तर श्री सब स्थविराय             | " " |
| ८  | लोकोत्तर पर्याय स्थविराय              | " " |
| ९  | लोकोत्तर श्रुत स्थविराय               | " " |
| १० | लोकोत्तर वय स्थविराय                  | " " |

ॐ ह्रीं णमो येराग—माला २०

—

## श्री उपाध्यायपद नमस्कार ६ ।

- |   |                                          |     |
|---|------------------------------------------|-----|
| १ | आचाराग सूत्र पाठरूप श्री उपाध्यायाय नम । |     |
| २ | सुयमडाग                                  | " " |
| ३ | समनायाग                                  | " " |
| ४ | टाणाग                                    | " " |
| ५ | भगवती                                    | " " |
| ६ | ज्ञाताधर्मक ३३                           | " " |

|                                   |   |   |
|-----------------------------------|---|---|
| ७ उपानिन्द्या                     | " | " |
| ८ अतगङ्गा                         | " | " |
| ९ अनुत्तरोत्तरा                   | " | " |
| १० प्रश्नन्यासखण्ड                | " | " |
| ११ विषाह                          | " | " |
| १२ उववाद् उपाग श्रुत              | " | " |
| १३ रायपसेणी                       | " | " |
| १४ नीशामिगम                       | " | " |
| १५ पन्नयणा                        | " | " |
| १६ जम्बूद्वीप पन्नति              | " | " |
| १७ चद्रपन्नति                     | " | " |
| १८ सूरपन्नति                      | " | " |
| १९ निरया रलिया                    | " | " |
| २० रपिया                          | " | " |
| २१ पुष्कचुलिया                    | " | " |
| २२ पुष्किया                       | " | " |
| २३ वह्निदशा                       | " | " |
| २४ द्वादशार्गी श्रुत              | " | " |
| २५ द्वादशार्गी श्रुतार्थन्यासखण्ड | " | " |

ॐ ह्रीं णमो उवज्जायाण—२० माला



## श्री सायुपद नमस्कार ७ ।

- १ पृथ्वीकाय रत्नकर्म्यः सर्वमाधुभ्यो नमः
- २ जम्बूकाय रत्नकर्म्य " "
- ३ तेज काय " "
- ४ वाट काय " "
- ५ वनस्पतिकाय
- ६ वसुकाय " "
- ७ सर्वत प्राणातिपात विरतेभ्य
- ८ सर्वतो मृपावाद् "
- ९ सर्वतो श्रद्धादान , ,
- १० सर्वतो मयून , "
- ११ सर्वत पम्पित , ,
- १२ सर्वतो रात्रि भोजन "
- १३ रुपाय वारकर्म्य " "
- १४ श्रोत्रेन्द्रिय त्रिपय " "
- १५ चक्षु इन्द्रिय त्रिपय " "
- १६ घ्राणन्द्रिय त्रिपय " "
- १७ रसेन्द्रिय त्रिपय , "
- १८ स्पर्शेन्द्रिय त्रिपय " "
- १९ शीतानि परीपह सहनकारकेभ्य
- २० क्षमादि गुणधारकेभ्य ,

- २१ माय विगुद्धभ्यः " "
- २२ मनोयोग विशुद्धेभ्यः " "
- २३ वचनयोग विशुद्धेभ्यः " "
- २४ काययोग विशुद्धेभ्यः " "
- २५ मरणान्त उपमर्गधीरेभ्यः " "
- २६ अगोपाग मकोचनशीलेभ्यः " "
- २७ निराय मयमयोग युक्तेभ्यः " "

ॐ ह्रीं णमो लोए सत्र माहुण—०० माला

### श्री ज्ञानपद नमस्कार ८ ।

- १ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनाग्रह मति वानाय नम ।
- २ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनाग्रह " "
- ३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनाग्रह " "
- ४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनाग्रह " "
- ५ स्पर्शनेन्द्रिय अर्थाग्रह ,
- ६ रसनेन्द्रिय अर्थाग्रह " "
- ७ घ्राणेन्द्रिय अर्थाग्रह " "
- ८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थाग्रह ,
- ९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थाग्रह " "
- १० मनोऽर्थाग्रह " "
- ११ स्पर्शनेन्द्रिय इहा ,



|    |                       |   |      |
|----|-----------------------|---|------|
| १२ | रसनेन्द्रिय ईहा       | , |      |
| १३ | घ्राणेन्द्रिय ईहा     | " |      |
| १४ | चक्षुरिन्द्रिय ईहा    | " |      |
| १५ | श्रोत्रेन्द्रिय ईहा   | " |      |
| १६ | मन ईहा                | " |      |
| १७ | स्पर्शनेन्द्रिय अपाय  | " |      |
| १८ | रसनेन्द्रिय अपाय      | " |      |
| १९ | घ्राणेन्द्रिय अपाय    | " |      |
| २० | चक्षुरिन्द्रिय अपाय   | " |      |
| २१ | श्रोत्रेन्द्रिय अपाय  | , |      |
| २२ | मनोऽपय                | " |      |
| २३ | स्पर्शेन्द्रिय धारणा  | " |      |
| २४ | रसनन्द्रिय धारणा      | " |      |
| २५ | घ्राणेन्द्रिय धारणा   | , |      |
| २६ | चक्षुरिन्द्रिय धारणा  | , |      |
| २७ | श्रोत्रेन्द्रिय धारणा | " |      |
| २८ | मनो धारणा             | " | ॥२८॥ |
| २९ | अक्षरश्रुतज्ञानाय नम  | " |      |
| ३० | अक्षर श्रुत           | " |      |
| ३१ | सति श्रुत             | " |      |
| ३२ | असति श्रुत            | " |      |
| ३३ | मम्यक् श्रुत          | " |      |

- ३४ मिथ्या श्रुत ज्ञानाय नमः  
 ३५ सादि श्रुत " "  
 ३६ अनादि श्रुत " "  
 ३७ सपर्यवमित श्रुत " "  
 ३८ अपर्यवमित श्रुत " "  
 ३९ गमिकु श्रुत ' '  
 ४० अगमिकु श्रुत " "  
 ४१ अग प्रविष्ट श्रुत ' "  
 ४२ अनग प्रविष्ट श्रुत " " ११४।  
 ४३ अनुगामि अरधि ज्ञानाय नम ।  
 ४४ अननुगामि अरधि " "  
 ४५ वर्द्धमान अरधि " "  
 ४६ हीयमान अरधि " "  
 ४७ प्रतिपाति अरधि " "  
 ४८ अप्रतिपाति अरधि " '  
 ४९ ऋजुमति मन पर्याय ज्ञानाय नम ।  
 ५० रिपुलमति मन पर्याय " १२।  
 ५१ लोका लोका प्रकाशक श्री केरल ज्ञानाय नम ।

ॐ ह्रींणमो नाणस्म-२० माला

## श्री दर्शनपद नमस्कार ६ ।

- १ परमार्थ सस्तर रूप सम्यग्यदर्शनाय नम
- २ परमार्थज्ञातु सेवन रूप " "
- ३ कुलिंग दर्शन वर्जनेन रूप " "
- ४ कुदर्शन वर्जनेन रूप " "
- ५ शुश्रूषा रूप " "
- ६ धर्मावुराग रूप " "
- ७ वैयाघृत्य " "
- ८ श्री गुरुभक्ति विनय रूप
- ९ श्री सिद्ध विनय रूप
- १० चैत्य विनय रूप
- ११ श्रुत विनय रूप
- १२ धर्म विनय रूप
- १३ साधु विनय रूप
- १४ श्री आचार्य विनय रूप " "
- १५ श्री उपाध्याय विनय रूप " "
- १६ प्रवचन विनय रूप " "
- १७ दर्शन विनय रूप
- १८ ससारे जिन मति सारमिति चितन रूप
- १९ ससार जिन मति सारमिति चितन रूप
- २० ससारे जिन मतमिथित साध्यादि सारमिति

|    |                                   |   |   |
|----|-----------------------------------|---|---|
| २१ | शका दूषण रहिताय                   | ” | ” |
| २२ | काया दूषण रहिताय                  | ” | ” |
| २३ | विरिकित्सा-दूषण रहिताय            | ” | ” |
| २४ | कुट्टि प्रथमा दूषण रहिताय         | ” | ” |
| २५ | वत्परिचय दूषण रहिताय              | ” | ” |
| २६ | प्रवचन प्रमारक रूप                | ” | ” |
| २७ | धर्मकथा प्रमारक रूप               | ” | ” |
| २८ | गानी प्रमारक रूप                  | ” | ” |
| २९ | नैमित्तिक प्रमारक रूप             | ” | ” |
| ३० | तपस्वी प्रमारक रूप                | ” | ” |
| ३१ | प्रव्रज्याणि विगाभृत्प्रमारक रूप  | ” | ” |
| ३२ | चूर्णाग्निनादि मिद्धि प्रमारक रूप | ” | ” |
| ३३ | इति प्रमारक रूप                   | ” | ” |
| ३४ | जिन गामन शौगल भूषण रूप            | ” | ” |
| ३५ | प्रमारना भूषण रूप                 | ” | ” |
| ३६ | तीर्थ सेवा भूषण रूप               | ” | ” |
| ३७ | धैर्य भूषण रूप                    | ” | ” |
| ३८ | निन शामन भक्ति भूषण रूप           | ” | ” |
| ३९ | उपगम गुण रूप                      | ” | ” |
| ४० | संवेग गुण रूप                     | ” | ” |
| ४१ | निर्दद गुण रूप                    | ” | ” |

|    |                                        |   |   |
|----|----------------------------------------|---|---|
| ४२ | अनुकपा गुण रूप                         | , | ' |
| ४३ | आस्तिरता गुण रूप                       | " |   |
| ४४ | परतीर्थिकादि वदन वर्जन रूप             | " | " |
| ४५ | परतीर्थिकादि नमस्कार रजन रूप           | " | " |
| ४६ | परतीर्थिकादि आलाप रजन रूप              | " | " |
| ४७ | परतीर्थिकादि मलाप मर्जन रूप            | " | " |
| ४८ | परतीर्थिकादि अशनादिदान वचन रूप         | " | " |
| ४९ | परतीर्थिकादि गधपुष्पादिदान वर्जन रूप   | " | " |
| ५० | राजाभियोगाकार युक्ताय                  | " |   |
| ५१ | गणाभियोगाकार युक्ताय                   | " |   |
| ५२ | बलाभियोगाकार युक्ताय                   | " |   |
| ५३ | सुराभियोगाकार युक्ताय                  | " |   |
| ५४ | कान्तार वृत्त्याकार युक्ताय            | " |   |
| ५५ | गुरु निग्रहाकार युक्ताय                | " |   |
| ५६ | सत्यव्रत्व धमस्य मूलमिति चिंतन रूप     | " | " |
| ५७ | मम्यव्रत्व धर्मपुर द्वारमिति चिंतन रूप | " | " |
| ५८ | धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप       | " | " |
| ५९ | धमस्याधार मिति चिंतन रूप               | " | " |
| ६० | धर्मस्य भाजन मिति चिंतन रूप            | " | " |
| ६१ | धर्मस्य निधि सनिभमिति चिंतन रूप        | " | " |
| ६२ | अस्ति जीव इति श्रद्धान रूप             | " | " |

- ६३ सच जीरो नित्य इति श्रद्धान रूप " "
- ६४ जीव कर्माणि करोति इति श्रद्धान रूप " "
- ६५ जीव कृत कर्माणि वदयताति श्रद्धान रूप " "
- ६६ नीरस्यास्ति निरणमिति श्रद्धान रूप " "
- ६७ अस्ति पुनमोक्षोपाय इति श्रद्धान रूप " "
- ॐ ह्रीं गमो दमणस्म—२० माला



### श्री विनयपद नमस्कार १० ।

- १ श्री अरिहत आमातना वर्चन रूप विनय गुणाय नम. ।
- २ श्री अरिहत भक्ति प्रण रूप " "
- ३ श्री अरिहत बहुमान प्रण रूप " "
- ४ श्री अरिहत उचन श्रद्धान रूप " "
- ५ श्री मिद्ध आमातना वर्चन रूप " "
- ६ श्री मिद्ध भक्ति प्रण रूप " "
- ७ श्री मिद्ध बहुमान रूप " "
- ८ श्री मिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप " "
- ९ सुविहित चन्द्रादि कुलामातन वर्चन रूप " "
- १० सुविहित चन्द्रादि कुल भक्ति प्रण रूप " "
- ११ सुविहित कुल बहुमान रूप " "
- १२ सुविहित कुल मस्तुति करण रूप " "

|                                        |    |
|----------------------------------------|----|
| १३ सुनिहित कौटिकादि गण भक्ति करण रूप   |    |
| १४ सुनिहित कौटिकादि गण बहुमान करण रूप  | ११ |
| १५ सुनिहित कौटिकादि गण सस्तुति करण रूप | ११ |
| १६ सुनिहित गण-अनामातना रूप             | ११ |
| १७ श्री मघ अनामातना रान रूप            | ११ |
| १८ श्री मघ भक्ति करण रूप               | ११ |
| १९ श्री मघ बहुमान करण रूप              | ११ |
| २० श्री मघ स्तुति करण रूप              | ११ |
| २१ आगमोक्त क्रिया अनामातना रूप         | ११ |
| २२ आगमोक्त क्रिया भक्ति करण रूप        | ११ |
| २३ शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप         | ११ |
| २४ शुद्ध क्रिया स्तुति करण रूप         | ११ |
| २५ जैन धर्म अनामातना रूप               | ११ |
| २६ जैन धर्म भक्ति करण रूप              | ११ |
| २७ जैन धर्म बहुमान करण रूप             | ११ |
| २८ जैन धर्म स्तुति करण रूप             | ११ |
| २९ ज्ञान गुण अनामातना करण रूप          | ११ |
| ३० ज्ञान गुण भक्ति करण रूप             | ११ |
| ३१ ज्ञान गुण बहुमान करण रूप            | ११ |
| ३२ ज्ञान गुण स्तुति करण रूप            | ११ |
| ३३ नानि जन अनामातना रूप                | ११ |

|                               |    |
|-------------------------------|----|
| ३४ ज्ञानि जन भक्ति करण रूप    | ५  |
| ३५ ज्ञानि जन धनुमान करण रूप   | ५  |
| ३६ ज्ञानि जन स्तुति करण रूप   | ५  |
| ३७ आचार्य आमातना वचन रूप      | ५  |
| ३८ आचार्य भक्ति करण रूप       |    |
| ३९ आचार्य धनुमान करण रूप      |    |
| ४० आचार्य स्तुति करण रूप      |    |
| ४१ स्थविर मुनि अनामातना रूप   |    |
| ४२ स्थविर मुनि भक्ति करण रूप  |    |
| ४३ स्थविर मुनि धनुमान करण रूप | १  |
| ४४ स्थविर मुनि स्तुति करण रूप | १  |
| ४५ उपाध्याय अनामातन रूप       | ११ |
| ४६ उपाध्याय भक्ति करण रूप     | ११ |
| ४७ उपाध्याय धनुमान करण रूप    | ११ |
| ४८ उपाध्याय स्तुति करण रूप    | ११ |
| ४९ गणानच्छेदक अनामातन रूप     | १  |
| ५० गणानच्छेदक भक्ति करण रूप   |    |
| ५१ गणानच्छेदक धनुमान करण रूप  |    |
| ५२ गणानच्छेदक स्तुति करण रूप  |    |

ॐ ह्रीं एमीं ह्रीं



## श्री चारित्र्यपद नमस्कार ११ ।

- १ सर्वत प्राणातिपात विरमण रूपाय चारित्र्याय नमः ।
- २ सर्वत मृषावाद् विरमण रूपाय            "        "
- ३ सर्वत अदत्तादान विरमण रूपाय            "        "
- ४ सर्वत मधुन विरमण रूपाय                    "        "
- ५ सर्वत परिग्रह विरमण रूपाय                 "        "
- ६ क्षमा धर्म चारित्र्याय नम.                    "        "
- ७ आर्नेत्र धर्म चारित्र्याय नम                    "        "
- ८ मृदुता धर्म                                         "        "
- ९ मुक्ति धर्म                                         "        "
- १० तपो धर्म                                         "        "
- ११ सयम धर्म                                        "        "
- १२ सत्य धर्म                                        "        "
- १३ शौच धर्म                                         "        "
- १४ अकिंचन धर्म                                   "        "
- १५ ब्रह्मचर्य धर्म                                   "        "
- १६ पृथ्वीकाय रक्षा संयम                       "        "
- १७ अप्काय रक्षा संयम                           "        "
- १८ तैड काय रक्षा संयम                           "        "
- १९ वाउ काय रक्षा संयम                           "        "
- २० वनस्पती काय रक्षा संयम                   "        "

- २१ चन्द्रिय रक्षा समय
- २२ तटन्द्रिय रक्षा समय
- २३ चउरिन्द्रिय रक्षा समय ;
- २४ पचिन्द्रिय रक्षा समय
- २५ अनीय रक्षा समय ;
- २६ प्रेया समय ;
- २७ अनुपेक्षा समय
- २८ अधिक वस्त्र भक्तादि त्याग
- २९ प्रमार्जन रूप समय
- ३० मन समय
- ३१ वचन समय
- ३२ ज्ञाया समय
- ३३ श्री आचार्य वेयात्र च रूप ;
- ३४ श्री उपाध्याय वेयात्र च ;
- ३५ तपस्वी वेयात्र च
- ३६ लघुशिष्य वेयात्र च
- ३७ ग्लानमाधु वेयात्र च
- ३८ साधु वेयात्र च
- ३९ भ्रमणोपासक वेयात्र च
- ४० सब वेयात्र च
- ४१ कुल वेयात्र च

- ४२ गण वेयावच " " " " " "
- ४३ पशुपडगादि सहित वमति वर्जन रूपाय " " " "
- ४४ स्त्री-हास्यादि कथा वर्जन " " " "
- ४५ स्त्री आसन वर्जन " " " "
- ४६ स्त्री अगोपाग निरीक्षण वर्जन " " " "
- ४७ कुड्य तर स्थित स्त्री हास मास श्रवण वर्जन " " " "
- ४८ पूर्व सभोग चिंतन वर्जन " " " "
- ४९ अति सरस आहार वर्जन " " " "
- ५० अति आहार वर्जन " " " "
- ५१ अग विभूषा वर्जन " " " "
- ५२ अनशन तपो रूप " " " "
- ५३ ऊनोदरी तपो रूप " " " "
- ५४ वृत्ति संक्षेप तपो रूप " " " "
- ५५ रस त्याग तपो रूप " " " "
- ५६ काय क्लेश तपो रूप " " " "
- ५७ सलेखन तपो रूप " " " "
- ५८ प्रायश्चित तपो रूप " " " "
- ५९ विनय तपो रूप " " " "
- ६० वेयावच तपो रूप " " " "
- ६१ सज्ज्ञाय तपो रूप " " " "
- ६२ ध्यान तपो रूप " " " "

|    |                      |   |
|----|----------------------|---|
| ६३ | कायोन्मर्ग तपो रूप   | ” |
| ६४ | अनत ज्ञान युक्त      | ” |
| ६५ | अनत दर्शन युक्त      | ” |
| ६६ | अनत गुण रमण रूप      | ” |
| ६७ | क्रोध निग्रह करण रूप | ” |
| ६८ | मान निग्रह करण रूप   | ” |
| ६९ | माया निग्रह करण रूप  | ” |
| ७० | लोभ निग्रह करण रूप   | ” |

ॐ ह्रींणमो चारित्तस्त २०—माला

### श्री ब्रह्मचर्यपद नमस्कार १२ ।

- १ मनसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्याय नमः ।
- २ मनसा औदारिक विषय अकरावण रूप
- ३ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन रूप
- ४ वचसा औदारिक विषय अकरण
- ५ वचसा औदारिक विषय अकरावण ”
- ६ वचसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन ”
- ७ कायेन औदारिक विषय अकरण ”
- ८ कायेन औदारिक विषय अकरावण ”
- ९ कायेन औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन

|    |                                  |    |   |
|----|----------------------------------|----|---|
| १० | मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप       | १॥ | १ |
| ११ | मनसा वैक्रिय विषय अकरावण रूप     | १॥ | १ |
| १२ | मनसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन  | १॥ | १ |
| १३ | वचसा वैक्रिय विषय अकरण           | १॥ | १ |
| १४ | वचसा वैक्रिय विषय अकरावण         | १॥ | १ |
| १५ | वचसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन  | १॥ | १ |
| १६ | कायेन वैक्रिय विषय अकरण          | १॥ | १ |
| १७ | कायेन वैक्रिय विषय अकरावण        | १॥ | १ |
| १८ | कायेन वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन | १॥ | १ |

ॐ ह्रीं णमो उभयधराण—२० माला

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

## श्री क्रियापद नमस्कार १३ ।

|   |                                     |    |   |
|---|-------------------------------------|----|---|
| १ | कायिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय नमः । | १॥ | १ |
| २ | जघिहरणिका क्रिया                    | १॥ | १ |
| ३ | पारितापनिका क्रिया                  | १॥ | १ |
| ४ | प्राणाति पाति की क्रिया             | १॥ | १ |
| ५ | आरम्भिका क्रिया                     | १॥ | १ |
| ६ | परिग्रह क्रिया                      | १॥ | १ |
| ७ | भायाप्रत्ययिका                      | १॥ | १ |
| ८ | मिथ्या दर्शन प्रत्ययिका             | १॥ | १ |

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| ९ अक्षरव्याख्यान         | - " |
| १० दृष्टि क्रिया         | - " |
| ११ स्पर्शन क्रिया        | "   |
| १२ प्राप्तिन्य की क्रिया | "   |
| १३ सामतोपनिपातनिष्ठा     | "   |
| १४ नैशस्त्रि की          | "   |
| १५ स्वहस्त्रि की         | "   |
| १६ आणवणी क्रिया          | "   |
| १७ निदारणिया क्रिया      | "   |
| १८ अनामोग प्रत्ययिनी     | "   |
| १९ अनवस्त्र प्रत्ययिनी   | "   |
| २० आज्ञापन प्रत्ययिनी    | "   |
| २१ प्रयोग क्रिया         | "   |
| २२ समुदान क्रिया         | "   |
| २३ प्रेम क्रिया          | "   |
| २४ द्वेष क्रिया          | "   |
| २५ इरियापहिया            | "   |

ॐ ह्रीं णमो, निरीयाण—माला २० ।

## श्री तपपद नमस्कार १४ ।

- १ अनशन तपोयुक्ताय नम ।
- २ ऊनोदर तपोयुक्ताय        "
- ३ वृत्ति सत्त्वे तपोयुक्ताय
- ४ रस त्याग                        "
- ५ काय क्लेश                     "
- ६ मलीनता तपोयुक्ताय नम ।
- ७ प्रायश्चित्त                     "
- ८ विनय                            "
- ९ वैषावृत्त्य                       "
- १० मज्ज्माय                       "
- ११ ध्यान                           "
- १२ नापोत्सग                     "

ॐ ह्रीं णमो तवस्म—२० माला



## श्री गौतमपदाराधन १५ ।

- १ श्रीगौतम गणधराय नमः ।
- २ श्रीअधिभूत गणधराय नम ।
- ३ श्रीवासुभूति                    "

- |    |                         |      |               |
|----|-------------------------|------|---------------|
| ४  | श्रीज्यत्तस्वामी        | ”    | ”             |
| ५  | श्रीसुषर्मास्वामी       | ”    | ”             |
| ६  | श्रीमण्डित स्वामी       | ”    | ”             |
| ७  | श्रीमार्पर्युत्र स्वामी | ”    | ”             |
| ८  | श्रीअकम्पित स्वामी      | ”    | ”             |
| ९  | श्रीअचलप्राता           | ”    | ”             |
| १० | श्रीमेतार्प स्वामी      | ”    | ”             |
| ११ | श्रीप्रमान स्वामी       | ”    | ”             |
| १२ | चौरीम तीर्थङ्करों के    | १४५२ | गणधरम्बो नम । |
- ॐ ह्रीं णमो गोयमाण—२० मान्ना



### श्री जिनपद नमस्कार १६ ।

- |   |                              |   |   |
|---|------------------------------|---|---|
| १ | श्रीमीमन्धर जिनेधराय नमः     | — | । |
| २ | श्रीयुगमन्धर जिनेश्वराय नम   |   | । |
| ३ | श्रीबाहु जिनेश्वराय नमः      |   | । |
| ४ | श्रीसुबाहु जिनेश्वराय नमः    |   | । |
| ५ | श्रीमुजात जिनेश्वराय नमः     |   | । |
| ६ | श्रीस्वय प्रम जिनेश्वराय नमः |   | । |
| ७ | श्रीअपमानन                   | ” | ” |
| ८ | श्रीअनतवीर्य                 | ” | ” |



|                      |   |   |   |
|----------------------|---|---|---|
| ६ श्रीधर प्रभु       | " | " | " |
| १० श्रीविशाल         | " | " | " |
| ११ श्रीरत्नधर        | " | " | " |
| १२ श्रीचन्द्रानन     | " | " | " |
| १३ श्रीचन्द्रबाहु    | " | " | " |
| १४ श्रीभुजग स्वामी   | " | " | " |
| १५ श्रीद्वार स्वामी  | " | " | " |
| १६ श्रीनेमि प्रभु    | " | " | " |
| १७ श्रीशेर सेन प्रभु | " | " | " |
| १८ श्रीमहा सेन प्रभु | " | " | " |
| १९ श्रीदेवसेन        | " | " | " |
| २० श्रीअजितवीर्य     | " | " | " |

ॐ ह्रीं णमो जिष्णाय-२० माला

### श्री चारित्रपद नमस्कार १७ ।

- १ सर्वतः प्राणतिपात विरमणरूपाय चारित्राय नमः
- २ सर्वतः मृषापाद विरमण
- ३ सर्वतः अदत्तादान विरमण
- ४ सर्वतः मैथुन विरमण
- ५ सर्वतः परिग्रह विरमण
- ६ सर्वतः रात्रीभोजन विरमण

- ७ श्यांसमिति, ममिताय
- ८ माया समिति ममिताय
- ९ श्यामा ममिति ममिताय
- १० आयाणमडभत्तनिस्त्रेय्याममिति ममिताय
- ११ पारिष्ठापनिम्ना समिति
- १२ मनोगुप्ति गुप्ताय
- १३ वचन गुप्ति गुप्ताय
- १४ काय गुप्ति गुप्ताय
- १५ मनो दण्ड विरताय
- १६ वचनदण्ड विरताय
- १७ कायदण्ड विरताय

ॐ ह्रीं णमो चाग्निधराण—२६ इह

श्री ज्ञान पद नमस्कारः ॥१॥

- १ श्री आचारांग सभाय नमः ।
- २ श्री मूयगडांग
- ३ श्री ठाणांग
- ४ श्री समवायांग
- ५ श्री मगवती
- ६ श्री क्षाताधर्म कथा
- ७ श्री उपामन्दशा

|                             |   |   |   |
|-----------------------------|---|---|---|
| ८ श्री अन्तगडदशा सूत्रायनमः | " | " | " |
| ९ श्री अनुचरोक्त्वाइ        | " | " | " |
| १० श्री प्रश्न व्याकरण      | " | " | " |
| ११ श्री विपाक               | " | " | " |
| १२ श्री उवनाई               | " | " | " |
| १३ श्री रायपसेखइय           | " | " | " |
| १४ श्री जीवामिगम            | " | " | " |
| १५ श्री पन्नवणा             | " | " | " |
| १६ श्री जम्बूद्वीप मन्त्री  | " | " | " |
| १७ श्री चन्द्रपन्नती        | " | " | " |
| १८ श्री सूरपन्नती           | " | " | " |
| १९ श्री निरया षलिया         | " | " | " |
| २० श्री पुष्पिका            | " | " | " |
| २१ श्री पुष्पचूलिका         | " | " | " |
| २२ श्री कल्पिका             | " | " | " |
| २३ श्री बद्धिदशा            | " | " | " |
| २४ श्री चउसरणपयन्ना         | " | " | " |
| २५ श्री सथारगपयन्ना         | " | " | " |
| २६ श्री मत्तपयन्ना          | " | " | " |
| २७ श्री चदाविजिय            | " | " | " |
| २८ श्री मरणविमत्ति          | " | " | " |

|    |                                    |   |   |
|----|------------------------------------|---|---|
| २९ | श्री गणिविजा                       | " | " |
| ३० | श्री तदुलवेपालिय                   | " | " |
| ३१ | श्री देवेन्द्रस्तव                 | " | " |
| ३२ | श्री आउर पचकखाण                    | " | " |
| ३३ | श्री महापचकखाण                     | " | " |
| ३४ | श्री दशवैकालिक                     | " | " |
| ३५ | श्री उचराध्ययन                     | " | " |
| ३६ | श्री आवश्यक मूल                    | " | " |
| ३७ | श्री पिण्ड नियुक्ति                | " | " |
| ३८ | श्री व्यवहारच्छेद                  | " | " |
| ३९ | श्री निशीथ                         | " | " |
| ४० | श्री महानिशीथ                      | " | " |
| ४१ | श्री दशाश्रुतस्वघ                  | " | " |
| ४२ | श्री जीतकल्प                       | " | " |
| ४३ | श्री पचकल्प                        | " | " |
| ४४ | श्री नदीचूलिका                     | " | " |
| ४५ | श्री अनुयोगद्वार                   | " | " |
| ४६ | स्यादस्तिमगप्ररूपकाय सूत्राय नमः । | " | " |
| ४७ | स्यान्नास्तिमग                     | " | " |
| ४८ | स्यादस्ति नास्ति मग ।              | " | " |
| ४९ | स्याद् वक्तव्य मग                  | " | " |

- ५० स्यादस्ति अरक्तव्य भग घ्राणनम ११ ११ १  
 ५१ स्यान्नास्ति अरक्तव्य भग ॥ ११ १ १  
 ५२ स्यादस्ति नास्ति अरक्तव्य भग ११ १ १

ॐ ह्रीं एमो णाणस्म—२० माला

### श्री श्रुतज्ञानपद नमस्कार १६ ।

- १ पर्याय श्रुतज्ञानाय नम १  
 २ पर्याय समाम श्रुत ११  
 ३ अक्षर श्रुत ११  
 ४ अक्षर समाम ११  
 ५ पदश्रुत ११  
 ६ पदसमासश्रुत ११  
 ७ सघात श्रुत ११  
 ८ सघात समाम श्रुत ११  
 ९ प्रतिपत्ति, ११  
 १० प्रतिपत्ति समास ११  
 ११ अनुयोग श्रुत ११  
 १२ अनुयोग समाम श्रुत ११  
 १३ श्रुत ज्ञानाय नम. १ १  
 १४ श्रुतसमास ज्ञानाय नमः । १ १



|    |                                |   |
|----|--------------------------------|---|
| १२ | क्रोधरहिताय                    | " |
| १३ | मानरहिताय                      | " |
| १४ | मायारहिताय                     | " |
| १५ | लोम रहिताय                     | " |
| १६ | रागाश विरताय                   | " |
| १७ | द्वेषाश विरताय                 | " |
| १८ | लज्जागुण युक्ताय               | " |
| १९ | दया गुण युक्ताय                | " |
| २० | माध्यस्थ्य गुण                 | " |
| २१ | सौम्य गुण                      | " |
| २२ | गुणानुराग गुण                  | " |
| २३ | अक्षुद्र गुण                   | " |
| २४ | सध प्रभावना गुण                | " |
| २५ | उपास्यगुण                      | " |
| २६ | लोकविरुद्ध वर्जन गुण           | " |
| २७ | अकर गुण                        | " |
| २८ | पाप मिरु गुण                   | " |
| २९ | परावचक-विश्वसनीय गुण           | " |
| ३० | दाक्षिण्य गुण                  | " |
| ३१ | अशुभ कथा वर्जन गुण             | " |
| ३२ | अलुक्कल धार्मिक परिवार युक्ताय | " |









## ★ रोहिणी तप स्तुति ★

वासुपूज्य निनेधर नन्दा, जया माता आनन्द कन्दा,  
 सर्व लीमों मुख कन्दा, वासु पूज्य निनेधर वन्दो,  
 मन भव सचित पाप निन्दो, आतम गुण आनन्दो ॥१॥  
 ऋषभाद्रिक चौबीस निन्दा, सेवा करे नित्य सकल सुरिन्दा,  
 मन घरी हर्ष आनन्दा, ताम चरण सेवे मन शुद्धा,  
 शिव मुख कारण सगही मिलुद्धा, निर्मल जैसा दुद्धा ॥२॥  
 रोहिणी प्रमुख तपस्या सारी, जे भाषित जिनवर गणघारी,  
 मव्य मङ्गल हितकारी, अहना आगम जे चित्त धार,  
 श्री निन वाणी पढ़े पढ़ाये, तेह अक्षय मुख पाव ॥३॥  
 श्री निन शासन मानिष्य कारी, धूर वी मंगल दुरित निगारी,  
 सेवो शुभ आचारी, कन्याण कारण जिननी सेवा,  
 सुर-नर पूजित शासन दवा, निज हरो नित्य मेरा ॥४॥

## ★ द्वितीया-स्तुति ★

श्री वासुपूज्यनी पूजिये, जिन चरण तथा फल लीजिये ॥  
 देवी राणी जय करो, मन वाञ्छित पूरण सुखरो ॥१॥  
 पांच भरत पाच जैवता, पाच महा विदेहमा विचरन्ता ।

ऋष चांभीशी रहेंतेरा, चिन वीश नमों दिन सुख करा ॥२॥  
 त्रिगढ़े बैठे चिन भणें, तिहा वपणे करी वखाण करे ॥  
 जोनन लग्नी चिन वाणी विन्तर, गारह पर्यदा बँठी चिच घरे ३  
 शामन देरी नाम प्रभा, भव सकल सोहकरा ॥  
 वर वाचक मेव परन, मुदा मंघचन्द्र हुआ सुख सपदा ॥४॥

## ● रोहिणी-तप-स्तवन ●

शामन देवता स्वामिनी अरे, मुझ सानिध्य कीजे ।  
 भूज्यो अश्वर भक्त भणी, समझाई ने दीने ॥  
 मोटो तप रोहिणी तणो अरे, तिणरा गुण गाऊ ।  
 चिन सुख सोहग सपदा अरे, वाच्छिन फल पाऊ ॥ १ ॥  
 दक्षिण भरते अय देश छे, तिहा चपा नयरी ।  
 मयरा गना राज्य करे, तिणे जीत्या ययरी ॥  
 पाट तणी राणी रुजटी अरे, लक्ष्मी अणे नाम ।  
 आठ पुत्र हुआ तेहने अरे, मन म सुख पाम ॥ २ ॥  
 रोहिणी नाम पुत्रिका अरे, सत्र को सुखनारी ।  
 आठों पुत्रों ऊपर अरे, तिणे लागे प्यामी ॥  
 बढे चन्द्र तणी फला अरे, निम पशु अजुमाले ।  
 तिम त छु री धाय माय, पाचे प्रति पाले ॥ ३ ॥

कुवरी रूप रुअड़ी अरे, घर आगण बैठी ।  
 दीठी राना खेलती अरे, मन चिन्ता पैठी ॥  
 नख भवन निपे अहरी अरे, नहीं बीनी नारी ।  
 रमा-पद्मा-गौरी गगा, इण आगल हारी ॥ ४ ॥  
 पुरुष न दीसे कोई इसो अरे, जेहन परणावू ।  
 आखों आगल शाल बधे, तिण सुख न पाऊ ॥  
 देश दशना राजवी ए, ततवण तेढाव्या ।  
 सबल सनाई सज करी, नरपति पण आया ॥ ५ ॥  
 वीतशोक राना तयो ए, छे कुमर सौभागि ।  
 कन्या केरी आखडी ए, तिया सेती लागी ॥  
 ऊभा देगे सरुल लोक, चडिया कई पाला ।  
 चित्र शन रे कण्ठ ठरी, कुवरी नरमाता ॥ ६ ॥  
 देव अने देवागना ए, नपे जय-नयनार ।  
 रलियायत थयो देविने ए, सारी समार ॥  
 कर जोडी ने लोफ कह, नर कन्या नो जोडी ।  
 वीतशोक नो कुमर थयो, शिर ऊपर लाडो ॥ ७ ॥  
 इम पिनाह थयो भलो ए, दीघा दान थपार ।  
 घर आमा परणी करी ए, हररयो परिवार ॥  
 वीतशोक राजा पुत्र मणी ए, अपणो पाटन दीघो ।  
 आपन समय आदरी ए, जग मे यश लीघो ॥ ८ ॥

❀ ढाल-दूसरी ❀

॥ इवे भरियण र पचमी उज्जमणो-सुणो ए राह ॥

तिण नयरी रे, चियसेन राना थयो ।  
 सुखमाही र, कटलो काल वही गयो ॥  
 एणे अवमर रे, आठ पुत्र हुआ भला ।  
 चढते पत्र रे, चन्द्र जैमी चढती कला ॥ १ ॥

— त्रोटक —

चढती कशहव राय बँटो, पाम वैठी रोहिणी ।  
 सातमी भूमे सान्त सती, करे क्रीडा अति घणी ॥  
 आठमो बालक गोठ उपर, रङ्ग से राणी लीयो ।  
 पुत्र ने प्रीतम आस आगल, देखता हरमे हीयो ॥ २ ॥

ढाल

एक कामिनी रे, गोखे चढी दष्टि पड़ी ।  
 तँड फडतीरे रोव रीके बापडी ॥  
 बुढापणे रे, मन गमतो बालक सुयो ।  
 हुँतो एकर रे, तीण अधिरु केरो दु ख हुआ ॥३॥

## त्रोटक

दु ए हुओ देगी रोहिणी, इम वंहे प्रीतम भणी ।  
 ए नारी नाचे अने वृदे, फिम व्हो माटाघणी ॥  
 एहवो नाटक थ्याज ताई, मै वद्री देख्यो नहीं ।  
 मुज्हा ने डमो अने तमाशो, दगर्ता आवे मही ॥४॥

## ढाल

इण वचने रे, रीमाणो राजा कहे ।  
 तू तो पापीणी र, परनी पीडा नवी लहे ॥  
 आ ते दु सिणी रे, पुत्र मुओ तड फड करे ।  
 जन धीतेरै, वेदना जाणे जेटली ॥ ५ ॥

## त्रोटक

जाणे जे तरे तू वात दु एनी, गर्ग चली कामिनी ।  
 एम नही राता हाथज्झाल्यो तेहना मालरु मणी ॥  
 सातमी भूमि वी तले नारयो, तैसे हा हा रच थयो ।  
 रोहिणी हसती कह प्रीतम, पुत्र नीचे फिम गयो ॥

## ढाल

हवे राता रे, पुत्र वणें शोके मरी ।

थयो मूर्च्छित रे, रोवे आलु भरी भरी ॥  
 पडतो सुत रे, शामन देव ते जाणियो ।  
 कचन मय रे, मिहामने बेसाडीओ ॥७॥

### त्रोटक

बेसाडीओ कर जोडी आगे, करे नाटक देवता ।  
 गोठ खिलवे कोई इमात्रे, पाद पश्यन सेवता ॥  
 उपन्यो भूपति ने अचभो, देखीने कारण मिमो ।  
 जो कोई नानी गुरु पधारे, पूछीये समय इमो ॥ ८ ॥

### ढाल

इम चित्तता रे, चारित्रिया आव्या इसे ।  
 गाना पण रे पढोच्यो वन्दन ने मिमे, ॥  
 सुणी देगना रे, पूज्ये प्रश्न सोढामणो ।  
 कढो स्वामो रे, पूरव मन बालक तणो ॥ ९ ॥

### त्रोटक

बालक तणो लन भूप पूछे कह एणी परे केवली ।  
 रोहिणी राणीतणो मन्त्रान्तर, अने राजानो वली ॥  
 श्री सुगुरु भाग्ये पाछ्छने भव, रोहिणी तप आदर्यो ।  
 तपतणी मगते मातु मगते, तुमें मनसागर तयो ॥१०॥



## ढाल

कहे राजा रे, निम रोहिणी तप कीनिये ।  
 विधि भाखों रे, निम तुम पासे लीनिये ॥  
 तव मुनिरर रे, विधि रोहिणीना तप तणी ।  
 इम जपेरे, चित्रसेन राजा मणी ॥ ११ ॥

## त्रोटक—

राजा मणी विधि एह जप, चन्द्र रोहिणी आरीये ।  
 उपवास कीजे लाम लीने, मली भानना भारीये ॥  
 धारमा निनरर तखी प्रतिमा, पूजिये मन रग शु ।  
 इम सात बरसा लगे कीजे, तजी थालम अङ्ग सु ॥१२॥



## ढाल—तीसरी

ॐ सहेलीण-आम्बो मोरीओ-प्राह ३३

तप करीए रोहिणी तपो, बली करिये हो उजमखो एमके ।  
 तप करता पातिक टले, तीण कीजेहो तप सेती प्रेमक ।  
 ॥ तप० १॥

देव जु हारी देहरे, तिन आगे हो पूनो श्रुव अगोर के ।  
गुणगो शरमा तिनतणो, मन्दा नैदेव हो धरिये मद्दु थोरु के ।

॥ तप० ॥ २ ॥

केमर चन्दन चरिषे, तिन आगे हो आठे मगलीक के ।  
विधि स पुष्कर पूनिप, तो लहिये हो तिरपुठ ठाक के ।

॥ तप० ॥ ३ ॥

मेवा कौन मायुनी, उलो दीज हो मुग्य माग्यो गान के ।  
मन्तोपी ने म्यधमां मन गों गो धरी करी परगान के ।

॥ तप० ॥ ४ ॥

पाटी-पौर्यी पू नगी, मपी लेखण हो झोलमिठ सु नगीण के ।  
नरकर बाली बीटागणा, गुरु आगड हो धरिय मतारीण के ।

॥ तप० ॥ ५ ॥

घोषु नूत पण तिग दिन, इमपाने हो, मन आणी रिपेरु के ।  
इण विधि रोहिणी आणें, त पामे हो आनन्द अनेक के ।

॥ तप० ॥ ६ ॥

## ढाल-चौथी

॥ श्री सिद्धचक्र चाराधिय-ए राइ ॥

इम महिमा रोहिणी, श्री ज्ञानी गुरु प्रसाधे रे ।

चित्रसेन ने रोहिणी, रामु पूज्य तीर्थ कर पासे रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ १ ॥

एणी परे रोहिणी आदरी, ऊपर उभूमणो कीघा रे ।

चित्रसेन ने रोहिणी, मन शुद्धे संयम लीघारे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ २ ॥

आठे पुरं आदरी दीक्षा वारमा जिन आगे रे ।

वली नाना विघ तप आदरे, चिन धर्म तणी मतिजागेरे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ३ ॥

करी अनशन आराधना, लही कवल गिवपद पायो रे ।

चिन वाणी जाणी है ये प्रभु चरण चितलायो रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ४ ॥

मन मोहन महिमा निलो, मं स्तवियो शिवपुर गामी रे ।

मन मान्या साहिन तणी, इव पुण्ये सेरा पामी रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ५ ॥

### कलश

इम गगन इन्दु मुनि चन्द्र ( १७१० ) वरसे ,  
चौथ श्रावण सुदि भली, में वहाँ रोहिणी तणी महिमा ।

सुगुरु मुखे जिम सामली ,

वासु पूज्य इम थया प्रमन्न अमने, चित्तनी चिन्ता टली ।  
 श्री साग निन गुण गावता, ह्ये सकल मन आशा फली ॥  
 ॥ इति सम्पूर्णम् ॥



❀ रोहिणी तप मञ्जाय प्रारभ्यते ❀

तप—मनमाह श्रामी

श्रीवासु पूज्य ने नमी श्रामी, ऋद्धं रोहिणी तप मुख कामी हो ।  
 धर्मी तन मुणना, तप करता मरिदु र जाय,  
 तप करता रोग न आय हो ॥ धर्मी० ॥ १ ॥  
 इन्द्रियना रिपयनी राणी ,  
 तप ऋर्म पीलणनी घाणी हो ॥ धर्मी० ॥  
 तप करता निर्मल प्राणी ,  
 आमा होय करल नाणी हो ॥ धर्मी० २ ॥  
 तप करता आतम गया ,  
 पायक कई रहे सधीराया ॥ धर्मी० ॥  
 रोग रहित होए काया ,  
 मरामुर सब पाया हो ॥ धर्मी०

१. धीरजवत जे धर्मकारी ,  
रहया कायनी माया निगारी हो ॥ धर्मी० ॥
- जेने मंगल माला धनारी ,  
ते तप करे निरधारी हो ॥ धर्मी०४ ॥
- ए तप रोहिणी नो छे वारू ,  
धर्मीजन करे चित्त चारू हो ॥ धर्मी० ॥
- सात बरस ऊपर मात माम ,  
रूरे कम क्षयनी आश हो ॥धर्मी०५॥
- तप पूरण उनमर्णा कीजे ,  
पूरण फललाहो लीजे हो ॥ धर्मी० ॥
- पूजा कीजे षट् युक्ति ,  
वासु पूज्यनी माध भक्ति हो ॥धर्मी०६॥
- वासु पूज्य नो चिम्ब मगरो ,  
जिनजानो आसाद करायो हो ॥धर्मी०॥
- केशर चन्दन ने आभरण ,  
नैवेद्य करो मन हरण हो ॥धर्मी०७॥
- स्वामी वत्सल करो बहु भक्ति ,  
पहेरामणी करी निज शक्ति हो ॥ धर्मी० ॥
- दीन दुःखीश्रोता दु ए कापो ,  
जाचक ने वाञ्छित आपोहो ॥ धर्मी०८॥

ज्ञान लयागो रे बहु रगे ,  
 अज्ञान नासे गुरु संगे हा ॥ धर्मी० ॥  
 इत्यादिक उचमणो कीने ,  
 मानव भवनों लाहो लीने हो ॥ धर्मी० ९ ॥  
 पूर्व मंत्र ए तप कीघो ,  
 रोहिणी राणी सुरा लीगो दो ॥ धर्मी० ॥  
 वासु पूज्य सुत पैटी जाणो ,  
 वामु पूज्य चरित्र वराणो दो ॥ धर्मी० १० ॥  
 ए तप करशे जे भवि मात्रे  
 रोग शोकादिक दु गनाये हो ॥ धर्मी० ॥  
 रुटी कीर्ति अनन्ती पामी  
 होवे अमृत पदनो स्वामी हो ॥ धर्मी० ११ ॥  
 रोहिणी तप के चै यज्ञ हनुनि, स्तवन, सञ्छाय-  
 ॥ सम्पूर्णम् ॥



### • अथ रोहिणी जाप ::

ॐ ह्रूं श्रीं वासु पूज्य स्वामी मर्नजायनम माला  
 २० लपे । तथा २७ लोगस्म का काउसगग करना, रोहिणी  
 तप आराधनार्थ काउसगग करना, तथा २७ धमाश्रमण  
 देना, इस प्रकार --

१ वासु पूज्य स्वामी का पहला पद रोहिणीजी का पहला पद, वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः

२. वासुपूज्य स्वामी का पहला पद—रोहिणीजी का दूजा पद—वासुपूज्य स्वामी सर्वनायनमः

३ वासुपूज्य स्वामी का पहला पद—रोहिणीजी का तीसरा पद—वासुपूज्य स्वामी सर्वनायनम

इस तरह से वासुपूज्य स्वामी का पहला पद रखन रोहिणीजी का बढ़ात बढ़ाते २७ नम्बर तक करके पूर्ण करना, २७ स्तिक (साधिया) करना ।



## अथ —चौदह पूर्व करने की विधि

यह तप चौदश से आराधे, चौदश चौदश पूर्व की पूजन (आराधना) करें । इस प्रकार ७ महीने तक करें यदि ऐसा न हो तो चौदह दिन लगाते एकामणा करें । प्रथम अग आचाराङ्ग सूत्र की स्थापना रखनी, वासुपूज्य पूजा करनी, बाद नित्य स्वस्तिक चैत्यपूजन आगम का करना, पीठे ज्ञान पूजा करनी, क्षमाश्रमण नरशरणात्मी २० गिनना देववन्दन करना । एक वस्तु । उने तो तीनों टाग्न वन्दन करना ।

१ ॐ हाँ श्री उत्पाद पूर्वाय नमः । पद ११

कोडी ५-लक्ष । स्वस्तिक २५-काउसग २५ लोगम्न का करना ।

२ ॐ ह्रीं श्रीं आग्रायणीं पूजयन्त । ५८ १ कोडी, ६ लक्ष, स्वस्तिक २८-काउसग २८ लोगम्न का करना ।

३ ॐ ह्रीं श्रीं धीर्यप्रसादं पूजयन्त । ५९ ८६वा ७० लक्षः । स्वस्तिक २२ काउ० २२ लोगम्न का ।

४ श्री अस्ति प्रसादं पूजयन्त । ६० नवधाम्निक ३२-काउ० ३२ लोगस्त का ।

५ श्री नान प्रसादं पूजयन्त । ६१ छोड़ मकड़ न्यून स्वस्तिक १०-काउ० १० लोगम्न का ।

६ श्री सत्य प्रसादं पूजयन्त । ६२ ६ करोड से कुछ अधिक स्वस्तिक २६-काउ० २६ लोगम्न का ।

७ श्री आत्म प्रसादं पूजयन्त । ६३ ३६ करोड-५० लक्ष । स्वस्तिक ३० काउ० ३० लोगम्न का ।

८ श्री कर्म प्रसादं पूजयन्त । ६४ १ करोड ८० लक्ष स्वस्तिक ४४-काउसग ४४ लोगम्न का ।

९ श्री प्रत्यारया पूजयन्त । ६५ ६४ लक्ष स्वस्तिक ३४-काउसग ३४ लोगम्न का ।



१० श्री त्रिधा प्रवाद पूर्वाय नमः । पद १ कोडी ।  
५६ लक्ष । स्वस्तिक १८ काउ० १८ लोगस्त का ।

११ श्री रुन्याण प्रवाद पूर्वाय नमः । पद २६ कोडी  
स्वस्तिक २६ काउ० २६ लोगस्त का ।

१२ श्री प्राणायाम पूर्वाय नमः । पद १ कोडी ५६  
लक्ष स्वस्तिक २७ काउ० २७ लोगस्त का ।

१३ श्री क्रिया विशाल पूर्वाय नमः । पद ९ कोडी  
२ स्वस्तिक ४४ काउ० ४४ लोगस्त का ।

१४ श्री लोखिन्दुसार पूर्वाय नमः । पद १२  
कोडी ५० लक्ष । स्वस्तिक ३६ काउ० ३६ लोगस्त का ।

इति सम्पूर्णम्

नोट—अत्र पदा में फक् आता है । चौदह पर्वों के ।  
चौदह पर्व का स्तवन

ढाल

तन बेकर जोड़ी तान

निनवर श्री वर्धमान, चरम तीर्थङ्कर ,

प्रह ऊठी प्रणम्य मुदा ए ।

श्रुतधर श्री गणधार, धरि शिरोमणी ,

नमता नम निधि सपदा ए ॥ १ ॥

चौदह पूरन नाम, सूत्रे जू जू ।

वा, वीर निणन्द भाखीया ए । तद्वि सुगुरु पसाय,  
वरणसु इहा, आगम म निम उपदिश्या ए ॥ २ ॥

पहिलो पूरन उत्पाद, दूजो जाग्रायणी ,  
वीर्य प्रसाद तीचो नमू ए, अस्तिनास्ति प्रसाद,  
सत्ता जाणिये, नाणप्रसाद पचम गिणू ए ॥ ३ ॥

छट्टो सत्य प्रसाद, सत्तम आत्मप्रसाद ,  
कर्मप्रसाद अट्टमगिणु ए । प्रत्यान्यानप्रसाद ,  
नामं नरम, विद्याप्रसाद दशमो र्हो ए ॥ ४ ॥

इग्यारम नाम कल्याण, प्राणायाम शरमो,  
क्रियाशिशाल तेरम भणो ए । विन्दुसार इण नाम,  
चौदह कथा, शास्त्र थमी म सग्रहा ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल—दूमरी ॥

॥ वरुं—विमलाचल सिरतिलो ए ॥

उत्पात् पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ।  
पट्माव प्रकृष्ट छेते तिहा, त्रिपदी भाव विघ्नाण ॥ ६

सर द्रव्य पर्याय तपो, जीव विशेष प्रमाण ।  
 दूने पर आग्रायणी, उच्च लय पर जाण ॥ २ ॥  
 पर लय मितर जेहना, मग्ना परगट गद ।  
 वीर्य प्रवल्ता नीरनी, भागी तीने तेह ॥ ३ ॥  
 चौथ पूर्व जे कपो, अस्तिनाम्तिप्रवाद ।  
 पद मरुवा गठ लागनी, मस भागी म्याद्वाद ॥ ४ ॥  
 नानप्रवाद पद परमो, एष आप्णो जोड ।  
 मयादिक पग भैरु सु, पर सख्या इरु कोड ॥ ५ ॥  
 सत्यप्रवाद छोडो रहै, भागु सत्य स्वरूप ।  
 सख्या पद इरु कोडनी, भागी अगम अनूप ॥ ६ ॥  
 नित्यानित्य पणो इहा, आत्म द्रव्य सुमार ।  
 छवीस पद कोड जेहना एर आया भार ॥ ७ ॥  
 कर्मप्रवाद तणा दिव, प्रकट पणो अधिहार ।  
 लाय अम्नी पद जेहना, जोड़ा इम निरघार ॥ ८ ॥  
 नरमो पर रहै दिव, नामे प्रत्यारथान ।  
 लाय चौराशी जेहना, पद मग्ना गित आन ॥ ९ ॥  
 अतिशय गुण मयुत मणी, साधन साध्य निदान ।  
 विद्या अपूम सात से, कोड़ी दश लय जाण ॥ १० ॥  
 कल्याणनाम इग्यारमो, छवीस कोड प्रमाण ।  
 ज्योतिर शास्त्र विचारणा, चौविह दव कल्याण ॥ ११ ॥  
 प्राणायु पद चारमो, छप्पन लय इरु कोड ।

प्राण निरोधन ते त्रिया, शास्त्रे षष्ठी नौड ॥ १२ ॥  
 कायिक्यान्विक जे त्रिया, छन्द त्रियामु विशाल ।  
 पद मन्व्या नत्र कोड री, तरमो त्रिया विशाल ॥ १३ ॥  
 लोकमत विन्दु चौमो, नाम अर्थ निहाल ।  
 पद मन्व्या इरु सोडनी, लाग परीण मभाल ॥ १४ ॥  
 लोफ प्रयय दग्गण मणी, मन्व्या गन परिमाण ।  
 मोल महस अरुतीन से, उपर तय्यामी जाण ॥ १५ ॥  
 पूरय सन्व्या एरु ही, गुण माला धी दग्ग ।  
 आगे बुधनन मोधज्या रात्री देश विशप ॥ १६ ॥

इति



## ढाल—तसरी

तर्ज —वीर त्रियोसर इम उपविधिगे

छत्रे गूथ गणधरा, अरथे श्री अरिहन्त भारेरे ।  
 ते श्रुत नमू सदा, पाप तिमिर निम नासेरे ॥ १ ॥  
 वाणीरे वीर जिणन्दनी, सुणनो चित हित आणीरे ।  
 तत्व रमणता अनुसरे, मपूरण गुण छाणी र ॥ राणी ० ॥ २ ॥  
 त्रिपय कपाय तजीररी, ज्ञान भगती उर घानी रे ।

त्रिधि सद्युत तिन मन्दिर, प्रभु मृग पास जुहारी रे ।

॥ वाणी० ॥ ३ ॥

तप नप मयम आर्यी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ।

सद्गुरु चरण नमी करी, सशर जोग प्रधानो र । वाणी० । ४ ।

अक्षत लड़ ऊनला गहूँली सुन्दर कीजे रे ।

नाणदसण चारित्रनी, ढिगली तीन घरीने र । वाणी० । ५ ।

चौदह पूरे ब्रत इण पर, सुगुरु मनोगे लई रे ।

त्रिधिसु पुम्नरु पृजिये, चित्त अति जादर देई रे । वाणी० । ६ ।

इम तप मपूग्य थयो, उज्जमणो द्विज कीने रे ।

घर सारू धन रगचन, नगमय लाहो लीन र । वाणी० । ७ ।

पूठा परत गीटागणा पूव नाम प्रमाणो रे ।

नवरुपवाली मोथली, लेखण ठगणी जाणो र । वाणी० । ८ ।

देहर देव जहारी ने, आरती मगल कीजेरे ।

स्नात्र पूजा रली साचरी, तत्व सुधारस पीजेर । वाणी० । ९ ।

इण पर तप आराधता, दृगति कारण छेदे र ।

चौदहरज्जु शिगेमण्णि, नात्र अवय गति वेदे रे ।

॥ वाणी० ॥ १० ॥

तप आराधन त्रिध मणी, आगम रचन जोई रे ।

मत्रिपण पिण तुर्म आदगे, ज्या भव भ्रमण न होई रे ।

॥ वाणी० ॥ ११ ॥

## कलश

इम सयल सुगन्ध गन्ध खरत तप रति निम कात ए ।  
 मीमांस्य सूरि मुनिन्द् इण पर ऊयो पूर्ण वृत्तान्त ए ॥  
 सवन् जठारह वरस्य द्विन्नु नयर श्री बालचरे ।  
 ए स्तवन भयता श्रयण सुणता मपठ मन साञ्चित फले ।

॥ १२ ॥ इति, ॥

गुमप भूयान् सुवे भूयान् मूयान् कन्याण मुत्तमम

~ ~ ~

परम पूज्य श्रीमान् प० प्र० विद्वद्भ्य श्रीजिन  
 कविन्दसागर मूरीश्वर की गहूली स्वर्गधाम  
 की पधारे की

चान मिताग नयन उनारा, वरीन्द् सरीश्वर देनरे ।

बूडा गाम म अस्त हमारा हुए सरीश्वर दवरे ॥टेरा॥  
 कहा गये सरीश्वर हमर, कके हमे निराधार रे ।  
 कहा जाये किम सेही पूजारे, छाप रहा अधकार रे ॥

॥ १ ॥ ज्ञान० ॥

दि-य ज्ञान दिनाकर गुस्तर, मीन करेगा भर पार रे ।  
 क्या जाना क्या हो गया गुस्तर, बिरह व्यथा है अपार रे ॥

॥ २ ॥ ज्ञान० ॥

गच्छनायक शिरोमणि गुरुवर, दो दर्शन एकवार रे ।  
भव्यजनो क तारक गुरु वर, करा न डुङ्ग भी विचार रे ॥

॥ ३ ॥ ज्ञान० ॥

अन्तिम शिदा मुनलो मुनिवर, कद कर छोड़ा मंमार रे ।  
गुरुवर गुरुवर कहते मुनिवर, धरणी ढले तत्कार रे ॥

॥ ४ ॥ ज्ञान० ।

कौन कराने पूजा प्रतिष्ठा, कौन देगा शिक्षा सार रे ।  
हैं हैं गनप किया श्रीशर, मधधर दुख अपार रे

॥ ५ ॥ ज्ञान० ॥

सस्था युगल स्थापक श्रीशर, नयन भर जल धार रे ।  
तुम ये दिव्य श्रीन्द्र श्रीशर, करिगुल किरीट शृ गार रे ॥

॥ ६ ॥ ज्ञान० ॥

द्विमहस्र अष्टादश म प्रभु, फालगुन शुक्ला मध्यरात रे ।  
स्वर्ग सिधाया श्रीशर प्रभु, मक्त करे कपान्त रे ॥

॥ ७ ॥ ज्ञान० ॥

दर्शन देदो प्रभुदित कर दो, सहाय करो गुरुदेव रे ।  
धीर वचनामृत उर म भरदो, रत्नाकर गुरुदेव रे ॥

॥ ८ ॥ ज्ञान० ॥

नितप्रति आप से अर्ज श्रीशर, कर देना भवपार रे ।  
माला "प्रमोद" कहे सुनना श्रीशर, कर दो वेडा पार रे ॥

॥ ९ ॥ ज्ञान ॥

॥ इति ॥

पूज्य गणाधीश श्रीमान् गान्धर्व

हेमेन्द्रसागरजी म० सा० ई०

गणाधीश गुरुदेव तुमको लाखों प्रकार

सूरीश्वर क पटधर गुरुवर, निज हृदय गुण  
चारित्र्य गुण मणि राशि १२

पंच महाव्रत धारक गुरुवर, ज्ञान रत्न  
रत्नत्रयी मुख खाण ॥ २१ ॥

शान्त मूर्ति तुमरी है गुरुवर, ज्ञान  
हो शिव मन्दिर मोक्षदा ॥ २२ ॥

चार कपाय के रोचक गुरुवर, ज्ञान  
पंच ममिति गुणवान ॥ २३ ॥

ज्ञानी ध्यानी तुम हो गुरुवर, ज्ञान  
हो रत्नों की खान ॥ २४ ॥

नाम आपका प्यारा गुरुवर, ज्ञान  
रखा विग्रह में नाम ॥ २५ ॥

आपका गुण हम गाये गुरुवर, ज्ञान  
रखकर हृदय ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ इति ॥



परम पूज्य व्याख्यान वाचस्पति प० प्र० शास्त्र विशारद  
श्रीमान् क्रान्तिमागरनी म० सा० की गहूँली ।

धन्य २ परम पूज्य भगवान्(गुरुद्वय)मयोदधि पार लघाने वाले  
भवोदधि पार लघाने वाले हमको शरण म रखने वाले ॥टेंग॥

आप गुण रत्नों की ग्यान, रखना हमग भी तो घ्यान ।  
हम हैं निरा बाल अज्ञान, कृपार्णव नाम धराने वाले

॥ धन्य । १ ॥

आप शासन क मरतान, रगिये मक्त जनों की लान ।  
कगती झुक सुरु रन्दन आन, पानर्णव नाम धराने वाले

॥ धन्य० । २ ॥

आप की महिमा अपरपार, गुण गाँ मय नर नार ।  
कर दीजिये हमको पार, मयडरिया से तराने वाले

॥ धन्य । ३ ॥

आपका नाम है जगदाधार, क्रान्ति क्रान्ति फैली ससार ।  
क्रान्ति सागर सा नाम में सार, विश्व म क्रान्ति फैलाने वाले

॥ धन्य । ४ ॥

यह नगरी धन्य है आज, पधारे मेरे गुरुवर राज ।  
सारी जग गई भक्त समाज, महोत्सव की शान रचाने वाले

हा हा उज्ज्वल कीर्ति फैलाने वाले ॥ धन्य ॥ ५ ॥

गुरु आप हो दीन दयाल करना भक्तों की प्रतिपाल ।



मत्र भ्रमण र्नी यह दुर्दशा को भगा दो जन्दी से ,  
 शुद्ध केडध (श्रद्धा) को जन्दी स्वीकार करो ॥ गुरु० ॥ ३ ॥  
 सप्तविंशति गुण के धारी, दोष बयालीश टारी हो ।  
 मद मोह माया को ही मारी धर्म ध्वज के धारी हो ,  
 ऐसे परम पूज्य से कुछ प्राप्त करो ॥ गुरु० ॥ ४ ॥  
 धन्य गुरुवर आपके हा रत्न अमोला पा लिया ,  
 धन्य हमरा भाग्य जो, कान्ति गुरुवर पा लिया ।  
 अब तो भाग्य सितारा चमकाया करो ॥ गुरु० ॥ ५ ॥  
 गुणगान करती प्रार्थना करती, नित्य दर्शन दीजिये ।  
 उपयोगे रमती ध्यान धरती की पूर्ण आशा कीजिये ॥  
 भगवन् कृपा की ननर वर्षाया करो ॥ गुरु० ॥ ६ ॥  
 मोद पाकर गुणगान करती, सेविका निज आप से ।  
 रखलो चरण के शरण म इतनी गुजारिश आपसे ।  
 वही "प्रमोद" को भर पार करो ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

शुभम् भूयात्

सुखं भूयात्

भूयात् फल्याणामुत्तमम्

ॐ शान्ति.

शान्ति

शान्ति.



